अध्याय 5

विश्वास की अभिव्यक्तियां

अध्याय 5 को ''विश्वास का अध्याय'' कहा जा सकता है। 5:17 और 5:40 में दो छोटे - छोटे अपवादों के साथ, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में, पूरा अध्याय ही विश्वास करने के बारे में है।

दुष्टात्मा से ग्रस्त को चंगा करना (5:1-20)[1]

इस विवरण में 4:35 में आरम्भ हुए यीशु के आश्चर्यकर्मों वाले भाग का दूसरा आश्चर्यकर्म है। दुष्टात्मा से ग्रस्त इस आदमी की चंगाई सुसमाचार के विवरणों में भूत निकालने का सबसे स्पष्ट विवरण है। इसमें पता चलता है कि सभी भूत एक से बिल्कुल नहीं थे। सुसमाचार के विवरणों तथा प्रेरितों के काम के काम के काम की पुस्तक में दुष्टात्मा से ग्रस्त होने को साधारण रोगों से अलग किया गया है।[2]

मरकुस 5 में दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति की कहानी में दृष्टांत का तत्व है। यीशु उन अज्ञात परिस्थितियों तथा जीवों की बात कर रहा हो सकता है, जिनके बारे में हम नहीं जान सकते।

कब्रों में रहने वाला एक आदमी (5:1-5)

[1]वे झील के पार गिरासेनियों के देश में पहुँचे, [2]जब वह नाव पर से उतरा तो तुरन्त एक मनुष्य जिसमें अशुद्ध आत्मा थी, कब्रों से निकलकर उसे मिला। [3]वह कब्रों में रहा करता था और कोई उसे साँकलों से भी न बाँध सकता था, [4]क्योंकि वह बार-बार बेड़ियों और साँकलों से बाँधा गया था, पर उसने साँकलों को तोड़ दिया और बेड़ियों के टुकड़े टुकड़े कर दिए थे, और कोई उसे वश में नहीं कर सकता था। [5]वह लगातार रात-दिन कब्रों और पहाड़ों में चिल्लाता, और अपने को पत्थरों से घायल करता था।

आयत 1. वे झील के पार गिरासेनियों के देश में पहुँचे। जहां यीशु इस बार मिला उस स्थान का स्पष्ट नाम पता नहीं है। मरकुस 5:1 और लूका 8:26, 37 में चाहे ''गिरासेनियों'' (NASB; NIV) या ''गदरेनियों'' (KJV) है, परन्तु मत्ती 8:28 में ''गदरेनियों'' (NASB; NIV) या ''गिरगेसियों'' (KJV) है। ''गदारा'' जो कुछ लेखों में मिलता है, गिरेसा के मज़बूत किलानुमा नगर के बजाय गलील की झील के पास एक कस्बा था।[3] इस घटना वाला स्थान स्पष्टतया अन्यजातियों का इलाका था, क्योंकि इसकी चरागाह सूअरों से भरी हुई थी।

मरकुस सामान्य इलाके का परिचय दे रहा हो सकता है जबकि मत्ती अधिक सीमित क्षेत्र की बात कर रहा था। किसी इलाके को अलग-अलग नामों से जाना जा सकता है। उदाहरण के लिए, यूनाइटड स्टेट्स को आम तौर पर ''अमेरिका'' कहा जाता है।

आयतें 2-5. यीशु के **नाव पर से उतरने** के **तुरन्त** बाद मिला दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति **कब्रों में रहा करता था**। वीरानों या ''कब्रों में'' रहना आज भी बद्दूओं में आम है। उस इलाके

में मिली गुफ़ाएं बीस फुट तक चौड़ी हैं और उनमें शवों को दफ़नाने के लिए काफ़ी जगह होती होगी।[4] दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति खाली हुई गुफ़ाओं में रहता होगा जो पहले किसी की कब्रें हुआ करती थीं।

यह तथ्य कि यह व्यक्ति कब्रिस्तान में रहता था, संकेत देता है कि वह बहिष्कृत था जिसे अपने लिए और दूसरों के लिए खतरा माना जाता था। उन्नीसवीं सदी तक यूरोप के कुछ भागों में दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति के साथ ऐसा व्यवहार पागलों के साथ किए जाने वाले व्यवहार के जैसा ही था। उस समय से पहले गम्भीर रूप से मानसिक रोगी को आम तौर पर ''पागलखाने''[5] में डालकर ज़ंजीरों से बांध दिया जाता था।

कइयों ने इस बात का अनुमान लगाया है कि इस आदमी के अंदर जो आत्माएं थीं वे उन मुर्दों की आत्माएं थीं जिनके शव उस इलाके में दफ़न थे। दुष्टात्माएं सचमुच में मरे हुए लोगों की आत्माएं थीं, हो सकता है, परन्तु इस विचार के समर्थन में प्रमाण कहां हैं?[6] बाइबल ऐसा कोई संकेत नहीं देती कि मृत्यु के बाद आत्माओं पर शैतान का अधिकार होता है।

जोसेफ़स और आरम्भिक चर्च फादर्स ने माना कि दुष्टात्माएं मरे हुए लोग होते हैं, जबकि हनोक की अप्रमाणिक पुस्तक इस विचार को दर्शाती है कि दुष्टात्माएं नीचे गिराए गए स्वर्गदूत हैं। नये नियम में जिन्हें ''अशुद्ध आत्माएं'' कहा गया है (देखें मत्ती 8:28-33; लूका 8:27) समानांतर विवरणों में उन्हें ''दुष्टात्मा'' बताया गया है (लूका 7:21; 8:2)। दुःख की बात है कि KJV में उन्हें ''devils'' कहा गया है (जो कि दुष्ट का बहुवचन है - अनुवादक); परन्तु दुष्ट केवल एक है और वह शैतान को छोड़ कोई और नहीं हैं। परन्तु ''अशुद्ध आत्मा'' (demons) बहुत से हैं, जो कि यूनानी शब्द δαιμόνιον (*daimonion*) से लिया गया नाम है।[7] सुसमाचार के विवरणों में कभी ''devils'' और कभी ''अशुद्ध आत्माएं'' किया गया है। ये आत्माएं ''अशुद्ध'' थीं क्योंकि वे शैतान की सेवक थीं (देखें मत्ती 12:24-26; मरकुस 3:22-26; लूका 11:14-20)।

इस विचार का कि शुद्ध आत्माएं पुराने और नये नियम की शिक्षाओं में फैंके गए स्वर्गदूत बताए गए हैं 2 पतरस 2:4 का विरोधाभास लगता है: ''... जब परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को जिन्होंने पाप किया नहीं छोड़ा, पर नरक में भेजकर अन्धेरे कुण्डों में डाल दिया, ताकि न्याय के दिन तक बन्दी रहें।'' यह आयत कहती है कि फैंके गए ''स्वर्गदूतों'' का स्थान ''अंधेरे कुण्डों'' में कहीं है, जो इस बात का संकेत है कि उन्हें रोका गया है और उनमें पृथ्वी पर आकर बुराई करने की सामर्थ नहीं है।

यह विचार कि फैंके गए स्वर्गदूत वही हो सकते हैं जो यीशु के समय में अशुद्ध आत्माएं थीं, इफिसियों 6:12 में ''इस संसार के अंधकार के हाकिमों'' वाले पौलुस के हमारे युद्ध के विवरण से थोड़ा थोड़ा मेल खाता है। इस हवाले से पौलुस ने ''दुष्टता की आत्मिक सेनाओं जो आकाश में हैं'' की भी बात की। परन्तु इस वाक्यांश का अर्थ ''गड्ढा'' (ἄβυσσος, *abussos*) नहीं लगता, जहां इस व्यक्ति के अंदर रह रही अशुद्ध आत्माएं जाना नहीं चाहती थीं (लूका 8:31)। ''गड्ढे'' को हम अधोलोक मान सकते हैं, जो कि ''बुरी आत्माओं का अस्थाई कारावास, जिन्हें गेहन्ना या 'आग की झील' के अपने दुःख भरे निवास में आत्म-समर्पण करना पड़ेगा (मत्ती 25:41),'' अंतिम ठिकाना और ''शैतान, दुष्ट आत्माओं और उद्धार न पाने

वालों का अनन्त निवास''[8] है।

शायद अशुद्ध आत्माएं दुष्ट स्वर्गदूतों से कम दर्जे की थीं जिन्हें मसीह के समय के दौरान पृथ्वी पर विशेष प्रभाव रखने दिया गया। उनका सम्बन्ध मृत्यु, मरने, विनाश और बुराई से है। इफिसियों 6:12 में इन अजीब, शक्तिशाली जीवों को जिन्हें हम ''अशुद्ध आत्मा'' कहते हैं ''दुष्टता की आत्मिक सेनाओं'' के रूप में दिखाया गया हो सकता है। पौलुस ने कहा, ''क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।'' हो सकता है कि अशुद्ध आत्माएं संसार में शैतान की सहायता करती रहें परन्तु उनकी शक्ति को यीशु और परमेश्वर के प्रबल वचन के अधीन अधिक नियन्त्रित किया गया है।

इस वचन वाला आदमी, जिसमें ये अशुद्ध आत्माएं थीं, अलौकिक शक्ति को दिखा रहा था क्योंकि उसमें शैतान की बड़ी शक्ति दिखाई जा रही थी।[9] मरकुस ने अलग-अलग वाक्यांशों में उसकी असाधारण शक्ति का वर्णन किया है: **कोई उसे साँकलों से भी न बाँध सकता था; वह बार-बार बेड़ियों और साँकलों से बाँधा गया था, पर उसने साँकलों को तोड़ दिया और बेड़ियों के टुकड़े टुकड़े कर दिए थे; कोई उसे वश में नहीं कर सकता था।** उसके अंदर वह करने की शक्ति थी जो किसी साधारण व्यक्ति के वश से बाहर था। इसके अलावा **वह लगातार रात-दिन कब्रों और पहाड़ों में चिल्लाता, और अपने को पत्थरों से घायल करता था।**

मरकुस 5 और लूका 8 केवल एक व्यक्ति के बारे में क्यों बताते हैं, जबकि मत्ती 8 दुष्ट आत्मा से पीड़ित दो लोगों की बात करता है जो इतने खूंखार थे कि कोई उधर से जा नहीं सकता था? हो सकता है कि मरकुस और लूका ने केवल बहुत ताकतवर, व्यथित आदमी की बात की जिसके द्वारा बुरी आत्मा या आत्माओं का दल (''सेना''; 5:9) बात करता था।[10]

''तू परम प्रधान परमेश्वर का पुत्र यीशु है'' (5:6-13)

[6]वह यीशु को दूर ही से देखकर दौड़ा, उसे प्रणाम किया, [7]और ऊँचे शब्द से चिल्लाकर कहा, ''हे यीशु, परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र, मुझे तुझ से क्या काम? मैं तुझे परमेश्वर की शपथ देता हूँ कि मुझे पीड़ा न दे।'' [8]क्योंकि उसने उससे कहा था, ''हे अशुद्ध आत्मा, इस मनुष्य में से निकल आ!'' [9]उसने उससे पूछा, ''तेरा क्या नाम है?'' उसने उससे कहा, ''मेरा नाम सेना है; क्योंकि हम बहुत हैं।'' [10]और उसने उससे बहुत विनती की, ''हमें इस देश से बाहर न भेज।'' [11]वहाँ पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था। [12]उन्होंने उससे विनती करके कहा, ''हमें उन सूअरों में भेज दे कि हम उनके भीतर जाएँ।'' [13]अतः उसने उन्हें आज्ञा दी और अशुद्ध आत्मा निकलकर सूअरों के भीतर पैठ गईं और झुण्ड, जो कोई दो हज़ार का था, कड़ाड़े पर से झपटकर झील में जा पड़ा और डूब मरा।

आयतें 6-8. यीशु को देखकर अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त आदमी **दौड़ा, उसे प्रणाम किया, और ऊँचे शब्द से चिल्लाकर कहा, ''हे यीशु, परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र, मुझे तुझ से क्या काम?''** जो लोग यह सोचते हैं कि वह आदमी पागल था वे यह नहीं बता सकते कि उसने यीशु के पास आकर उसे प्रणाम क्यों किया और उसका नाम लेकर क्यों पुकारा। यीशु की

सेवकाई के दौरान ऐसा बहुत कम लोगों ने किया था। अपनी सुनवाई वाली रात यीशु को शपथ दिलाई गई थी कि वह माने कि वह ख्रिस्त या मसीहा है। इस विषय पर उसने महायाजक की बात से सहमति जताई (मत्ती 26:63, 64)। गतसमनी बाग में प्रार्थना करने से पहले, उसने प्रेरितों के सामने माना था, ''मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता'' (यूहन्ना 14:6)। उन बारहों को वह साफ साफ बता रहा था कि वह कौन है।

इन अशुद्ध आत्माओं का तरीका उन अशुद्ध आत्माओं के जैसा हो सकता है जिनकी बात याकूब ने कही जो, ''विश्वास रखते और थरथराते'' हैं (याकूब 2:19)। क्या अशुद्ध आत्माओं ने प्रणाम करने के लिए इस आदमी को यीशु को मनाने के लिए गिराया, इस उम्मीद से कि वे उसे उन्हें उस आदमी से निकलने को मजबूर न करने को मना लेंगे? बड़ी बात उनके प्रणाम की ईमानदारी या बेइमानी की नहीं है। उन्हें मालूम था कि वह ''परम प्रधान परमेश्वर का पुत्र'' है। उन्हें उसकी सामर्थ का पता था और वे उससे डरते और भयभीत होते थे।

''अशुद्ध आत्मा'' वाले आदमी ने यीशु से कहा, **''मैं तुझे परमेश्वर की शपथ देता हूँ कि मुझे पीड़ा न दे।''** KJV में ''मैं तुझ से अनुरोध करता हूं'' है, जो कि कानूनी शब्द ὁρκίζω (*horkizō*) को बहतर ढंग से दर्शाता है, जो अनुरोध किए जाने वाले व्यक्ति से कहलवाने को विवश करने के प्रयास को दिखाता है। यीशु ने पहले ही आज्ञा दे दी थी: **''हे अशुद्ध आत्मा, इस मनुष्य में से निकल आ!''** अशुद्ध आत्मा यही सोच रहे थे, कि मसीह की प्रार्थनाओं में परमेश्वर की शक्ति है, इसलिए वे उसे उनकी ओर से प्रार्थना करने के लिए मना सकते थे। यह यीशु को अपने आपको परमेश्वर की शपथ खाने की विनती थी। यीशु ने इसे अनदेखा कर दिया; स्रोत पर ध्यान करते हुए उसने जितना इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए था उतना नहीं दिया।

यह स्पष्ट है कि शैतान परमेश्वर के या मनुष्य के मन को नहीं जानता। यह एक कारण हो सकता है कि प्रभु की सहायता से हम उस पर जय पा सकते हैं। मत्ती 8:29 में मरकुस 5:7 का विचार प्रश्न के रूप में दिया गया है: ''क्या तू समय से पहले हमें दुःख देने यहां आया है?'' लूका 8:31 समझाता है कि वे ''गड्ढे'' में फैंके जाने से डर रहे थे, जहां उन्होंने देह रहित अवस्था में पीड़ा में रहना था।[11] देह से अलग होने का उनके लिए अर्थ ''अंधेर कुण्ड'' होना हो सकता था जिसके लिए पतरस ने कहा कि न्याय के समय तक उन्होंने वहीं रहता था (2 पतरस 2:4)।

इन अशुद्ध आत्माओं को मालूम था कि परमेश्वर की धमकियां यूं ही नहीं थी और एक दिन उनका विनाश होने वाला हे (देखें मत्ती 8:29; प्रका. 20:10)। यह उससे कहीं बढ़कर है जो आज के बहुत से लोग मानते हैं। प्रकाशितवाक्य 9:1–11 उसकी बात करता है जिसके पास अथाहकुण्ड की ''कुंजी'' है और उन दुष्ट शक्तियों को दुःख देने वाला सब कुछ करने देता है। अपोकलिप्स (प्रकाशितवाक्य) की रंगदार आकृतियों में, यह केवल उन बातों का वर्णन करता हो सकता है जब बुराई मसीह और संसार पर विजय पाने के व्यर्थ प्रयास में खतरनाक नुकसान करने के लिए पृथ्वी पर आती है।

अशुद्ध आत्माओं को पता था कि उन्हें न्याय का सामना करना पड़ेगा! यह बाइबल नहीं बताती है कि वह इसके घटने का ''समय'' कब होगा। यह बिल्कुल सम्भव है कि अशुद्ध आत्माओं ने यीशु के पुनरुत्थान के समय बड़ी शक्ति को खो दिया, जब वह ऐसे दुष्टात्मा से

ग्रस्त होने को पूरी तरह से खत्म करने तक शैतान को सीमित करने के लिए ''बंदियों को बांध ले गया'' और ''दान'' पीछे छोड़ दिए (देखें इफि. 4:8-16)। अपने अंतिम फैंके जाने तक शैतान के पास कुछ शक्ति रह सकती है; परन्तु नया नियम यह बताता है कि अब वह उन्हें जिन पर ''मोहर'' है यानी जो परमेश्वर के लोग हैं (देखें 2 तीमु. 2:19; प्रका. 7:3, 4;[12] 9:4) कोई हानि नहीं पहुंचा सकता।

आयत 9. यीशु ने आगे पूछा, **''तेरा नाम क्या है?''**[13] उसने कहा, **''मेरा नाम सेना है; क्योंकि हम बहुत हैं।''** उसके उत्तर से हमें यह नहीं पता चलता है कि यह किसी विशेष अशुद्ध आत्मा का नाम था या इस नाम का कोई दल था। रोमी ''सेना'' चार हज़ार से छह हज़ार सिपाहियों का दल होती थी, आम तौर पर (यीशु के समय में पूरी संख्या छह हज़ार की मानी जाती थी)। यदि इन अशुद्ध आत्माओं की संख्या हज़ारों में थी, तो उस आदमी की बुरी हालत की कल्पना नहीं की जा सकती।

आयतें 10-12. स्पष्टतया ये अशुद्ध आत्माएं या तो उस आदमी के अंदर से बोल सकती थीं या बाहर से। बाइबल यह संकेत देती है कि यीशु इन अशुद्ध आत्माओं को निकालने की प्रक्रिया में पहले से था (5:8); और उस आदमी में से निकलकर वे यीशु से बातें कर रही थीं। **उन्होंने उससे विनती करके कहा, ''हमें उन सूअरों में भेज दे कि हम उनके भीतर जाएँ।''** वे उससे उन्हें **देश से बाहर** भेजने के बजाय **पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था** उसमें भेजने को कह रहे थे।

5:2-13 में वर्णित बातचीत हमें अशुद्ध आत्माओं के व्यवहार से सम्बन्धित यीशु के अनोखे ज्ञान के बारे में कुछ बताती है। हमारे लिए एक प्रासंगिकता वह विचार है जो अपने जीवनों की बुराई से केवल पीछा छुड़ाने से कहीं बेहतर कुछ अच्छे से भर देता है। यीशु ने शास्त्रियों और फरीसियों को बताया,

> ''जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है, तो सूखी जगहों में विश्राम ढूंढ़ती फिरती है, और पाती नहीं। तब कहती है, 'मैं अपने उसी घर में जहां से निकली थी, लौट जाऊंगी।' और लौटकर उसे सूना, झाड़ा-बुहारा और सजा-सजाया पाती है। तब वह जाकर अपने से और बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले आती है, और वे उस में पैठकर वहां वास करती हैं, और उस मनुष्य की पिछली दशा पहले से भी बुरी हो जाती है। इस युग के बुरे लोगों की दशा भी ऐसी ही होगी'' (मत्ती 12:43-45)।

यीशु यह कह रहा था कि किसी में से निकल जाने के बाद अशुद्ध आत्मा उस व्यक्ति के जीवन के खालीपन के कारण उसमें फिर से प्रवेश कर सकती है और अपने साथ और अशुद्ध आत्माओं को यानी अपने से भी बुरी अशुद्ध आत्माओं को साथ ला सकती है। इस आदमी के मामले में ऐसा लगता नहीं है कि उस पर यह खतरा हो, चाहे मत्ती में यीशु ने कहा कि ऐसा हो सकता था।

मानना पड़ेगा कि अशुद्ध आत्माओं के बारे में बहुत सी बातें हमें पता नहीं हैं। परन्तु यदि हम उनके सम्बन्ध में नये नियम की स्पष्ट शिक्षा को मानें तो एक बात निकलकर आती है कि यीशु के पास उन पर पूर्ण अधिकार था। स्पष्टतया वे उसकी आज्ञा मानने को बाध्य थे।

आयत 13. अत: उसने उन्हें आज्ञा दी, और अशुद्ध आत्मा निकलकर सूअरों के भीतर पैठ गईं और झुण्ड, जो कोई दो हज़ार का था, कड़ाड़े पर से झपटकर झील में जा पड़ा और डूब मरा। मरकुस कई बार उस संख्या का उल्लेख करता है जहां सुसमाचार के अन्य विवरण ऐसी जानकारी को छोड़ देते हैं या इसे अलग ढंग से बताते हैं।[14] इस संदर्भ में सूअरों का पूरा झुण्ड **जो कोई दो हज़ार का था**, झील में भागकर **डूब मरा**। हम यह नहीं जानते कि कुछ सूअरों के भागने से भगदड़ मच गई या अशुद्ध आत्माएं सभी सूअरों में चली गई।

कइयों ने पूछा है, ''क्या यीशु को दो हज़ार सूअरों को जो कि अपने मालिकों की रोजी रोटी थे, नष्ट करने का अधिकार था?'' यदि मालिक यहूदी थे तो सूअर पालना उनके लिए नाजायज़ था। यदि ऐसा है तो यीशु ने उनके विवेक को छेड़ना चाहा हो सकता है। शायद उसे पता था कि क्या होगा और उसने सोचा, ''इन यहूदियों को मालूम था कि सूअर का मांस खाना यहूदियों को मना किया गया है और सूअरों के उनके झुण्ड के डूब जाने से उनके लिए बड़ा सबक होगा।'' जो भी हो, सूअरों का नाश शैतान की अशुद्ध आत्माओं ने किया, न कि यीशु ने।

और सम्भावना यह है कि सूअरों को पालने वाले लोग अन्यजाति थे। इस स्थिति में, अशुद्ध आत्माओं को सूअरों में जाने देकर और उनका विनाश होने देकर यीशु ने इन लोगों को जो परमेश्वर को नहीं जानते थे, स्पष्ट किया कि आश्चर्यकर्म हुआ था।

शैतान के साथ मेल करके फरीसियों ने यीशु पर आरोप लगाया (देखें 3:22), और यह कार्यवाही उस झूठे आरोप के विरुद्ध स्पष्ट प्रमाण था। तो फिर यीशु ने यह प्रदर्शन गलील की झील के पार के बजाय यहूदिया में क्यों नहीं किया? क्या इसलिए कि फरीसियों की तरह जो विश्वास नहीं करना चाहते थे, कुछ यहूदियों ने भी इस प्रमाण को नकार देना था? इसके अलावा, 3:22–29 में बड़ी समझदारी के साथ यह दिखाते हुए कि उसका शैतान के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था उसने उत्तर दे दिया था। शैतान ने अशुद्ध आत्मा से पीड़ित उस व्यक्ति को नष्ट करना चाहा परन्तु यीशु बचाने और विश्राम देने के लिए आया।

यीशु के बारे में मिली जुली प्रतिक्रियाएं (5:14–20)

[14]उनके चरवाहों ने भागकर नगर और गाँवों में समाचार सुनाया, और जो हुआ था, लोग उसे देखने आए। [15]यीशु के पास आकर वे उसको जिसमें दुष्टात्माएँ थीं, अर्थात् जिसमें सेना समाई थी, कपड़े पहिने और सचेत बैठे देखकर डर गए। [16]देखनेवालों ने उसका, जिसमें दुष्टात्माएँ थीं, और सूअरों का पूरा हाल उनको कह सुनाया। [17]तब वे उससे विनती कर के कहने लगे कि हमारी सीमा से चला जा। [18]जब वह नाव पर चढ़ने लगा तो वह जिसमें पहले दुष्टात्माएँ थीं, उससे विनती करने लगा, ''मुझे अपने साथ रहने दे।'' [19]परन्तु उसने उसे आज्ञा न दी, और उससे कहा, ''अपने घर जाकर अपने लोगों को बता कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किए हैं।'' [20]वह जाकर दिकापुलिस में इस बात का प्रचार करने लगा कि यीशु ने मेरे लिये कैसे बड़े काम किए; और सब लोग अचम्भा करते थे।

आयत 14. स्थानीय लोगों ने अपने सूअरों को गंवा दिया था और वे भय से भर गए थे।

प्रत्यक्षदर्शी दूसरों को बताने के लिए भाग गए और **जो हुआ था, लोग उसे देखने आए।** यदि वे यहूदी सूअर पालने का काम करते थे तो उनके बेचैन मन ने उन्हें परेशान किया होगा। यदि वे अन्यजाति थे तो वे बहुत डर गए होंगे कि इस शक्तिशाली अजनबी से उन्हें और क्या-क्या दुःख झेलना पड़ेगा।

आयतें 15, 16. झुण्ड के विनाश के विपरीत, देखने आए लोगों **उसको जिसमें दुष्टात्माएँ थीं, अर्थात् जिसमें सेना समाई थी, कपड़े पहिने और सचेत बैठे देखा** और **पूरा हाल** उन्हें बताया गया। वचन कहता है कि वे **डर गए**। जो कुछ यीशु ने किया था उससे उन्हें विचार करना चाहिए था। उन्हें पूछना चाहिए था कि ''यह आदमी कौन है?'' और शायद निष्कर्ष निकालना चाहिए था, ''मनुष्यों, दुष्टात्माओं, पशुओं के ऊपर इतनी शक्ति रखने वाला यह आदमी अवश्य ही परमेश्वर की ओर से है।'' निश्चय ही जागरूक लोगों ने कहा होगा, ''आओ हम उसके पास चलें, क्योंकि हो सकता है कि उसके पास हमारे लिए उद्धार की बातें हों!'' परन्तु उनके मन अपने वित्तीय घाटे और उस उपद्रवी से पीछा छुड़ाने से बढ़कर नहीं सोच पाए। उसकी सामर्थ से उनके डर और लाभ खोने की उनकी चिंता ने उन्हें अपने बचाव पर विचार करने को विवश कर दिया।

आयतें 17-19. इलाके के लोग चाहे **उससे विनती कर के कहने लगे कि हमारी सीमा से चला जा**, परन्तु दुष्टात्मा से शुद्ध हुआ व्यक्ति **उससे विनती करने लगा, ''मुझे अपने साथ रहने दे।''** यीशु ने नाव में बैठकर जाते हुए दोनों विनतियों का जवाब दिया। हमें आश्चर्य हो सकता है कि उसने पहली विनती को माना परन्तु दूसरी को नहीं। परन्तु परमेश्वर द्वारा कुछ विनतियों को मान लेना हमारे लिए की जाने वाली सबसे बुरी बात हो सकती है। इस्राएलियों के विषय में भजन 106:15 कहता है, ''[परमेश्वर] ने मुंह मांगा वर तो दिया, परन्तु उनके प्राण को सुखा दिया'' (ASV)। इन डरे हुए लोगों को सचमुच में समझ में नहीं आ रहा था कि उन्हें चाहिए क्या। उनके विनती करने पर मसीहा उनके इलाके से चला गया। वह वहां कभी नहीं रहता जहां उसकी आवश्यकता न हो।

भूतों से दुःखी यह आदमी शायद उस इलाके से चला जाना चाहता था जहां उसने बहुत सी शर्मनाक बातें की थीं। बेशक उसका मानना था कि उसे उस समाज में अपनी बदनामी को दूर करने के लिए मुश्किल आएगी। इसके अलावा शायद वह अपने परिवार से इतनी देर से अलग था कि उसे नहीं लगता था कि वे चाहेंगे कि वे वापस आए। सबसे बढ़कर वह हर बात में यीशु का देनदार था और उसी के साथ रहना चाहता था।

परन्तु उसके लिए प्रभु का उद्देश्य कहीं बड़ा है। **उसने उससे कहा, ''अपने घर जाकर अपने लोगों को बता कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किए हैं।''** इस आदमी को दासता से मिली नई नई स्वतन्त्रता ने उसे यीशु का अच्छा दूत बना देना था। उस इलाके के लोगों को सुसमाचार की उस अच्छी खबर के लिए तैयार होना आवश्यक था जो जल्द ही आने वाली थी। अब सुसमाचार का बीज बोने के लिए ज़मीन तैयार करने के लिए यह आदमी सही व्यक्ति था, और यह पक्का है कि उसने यह काम किया। उसकी विनती का उत्तर उसकी इच्छा के अनुसार नहीं हुआ, परन्तु उसने जहां पर भी वह गया हो सुसमाचार के प्रचार का बड़ा काम किया होगा।

अब इस व्यक्ति का जीवन कितना बड़ा था कि वह दूसरों को इस अजनबी यहूदी और इसकी सामर्थ के बारे में बता सकता था! शीघ्र ही उन्होंने उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान और अनन्त जीवन की उसकी पेशकश के संदेश को सुनना था। ऐसा लगता है कि बाद में उस इलाके में यीशु के पीछे चलने वाले बहुत से लोग हो गए (7:31-37)। शायद प्रेरितों का काम बहुत आसान हो गया क्योंकि इस आदमी ने मसीह की उद्धार दिलाने वाली अद्‌भुत सामर्थ के बारे में उस इलाके में हर किसी को पहले से बता दिया था।

हमें अपनी आशिषों को ''एक एक करके'' गिनना चाहिए।[15] यदि हम ऐसा करते हैं तो हमारे अंदर भी इस आदमी की जिज्ञासा होगी। यीशु ने उसे वह बताने को कहा जो उसके साथ हुआ था, क्योंकि यह एक अन्यजाति इलाका था जो सांसारिक मसीहा की वैसे तलाश नहीं कर रहा था, जैसे यहूदी कर रहे थे।[16]

आयत 20. वह ... दिकापुलिस में इस बात का प्रचार करने लगा कि यीशु ने मेरे लिये कैसे बड़े काम किए; और सब लोग अचम्भा करते थे। ''दिकापुलिस'' सिकन्दर महान द्वारा स्थापित यूनानी पृष्ठभूमि वाले दस नगरों में प्रमुख था। प्राचीन मध्य पूर्वी नगरों के सबसे अच्छी तरह सुरक्षित रखे खण्डहरों में से एक प्रसिद्ध बेतशान अर्थात सकूतपुलिस को छोड़ सभी यदरन के पूर्व में थे। दूसरे नौ नगर फिलदिलफिया, गिरासा, पेलाह, दमिश्क, कनाता, दियोन, अबिला, गदारा, और हिप्पोस दसों को अन्यजाति नगर माना जाता था।[17] ये रोमी शासन के अधीन थे परन्तु मुख्यतया स्वतन्त्र थे और यूनानी तौर तरीकों का इस्तेमाल करते थे, जैसा कि उनके मन्दिरों और रंगशालाओं से पता चलता है।

नासरत के सबसे निकट अन्यजाति नगर सिफोरिस था, जो कि यीशु के घर से केवल तीन मील था। इस नगर को उसकी जवानी के समय बसाया गया था। खुदाई के दौरान वहां सुन्दर टाइल मिली है। बढ़ई होने के कारण यीशु के पिता को उस नगर को खड़ा करने में सहायता के लिए मज़दूरी पर लगाया गया हो सकता है।

आस पास के यूनानी प्रभाव के कारण ऐसा लगता है कि यीशु ने अपने अलौकिक ज्ञान के अलावा यूनानी बोलना सीख लिया। यीशु के प्रेरितों को भी जो कि अधिकतर गलीली थे, यूनानी भाषा आती थी। वास्तव में गलील में यूनानी का बड़ा प्रभाव था; यहूदिया के यहूदी इसे ''अन्यजातियों का गलील'' कहते थे (मत्ती 4:15, 16; देखें यशा. 9:1, 2)। यीशु के पीछे पीछे चलने वाली बड़ी भीड़ में दिकापुलिस के लोग होते थे (मत्ती 4:25), उस इलाके के लोगों का उसकी ओर ध्यान बढ़ गया जब बहरे और हकले आदमी को चंगा किया गया (मरकुस 7:31-35)। यीशु के आदेश के विपरीत वे उसकी और उसके आश्चर्यकर्मों की खबर खुलकर लोगों को बता रहे थे (7:36)। लोग चकित होते थे और कहते थे, ''उसने जो कुछ किया सब अच्छा किया है; वह बहिरों को सुनने की, और गूँगों को बोलने की शक्ति देता है'' (7:37)।

अपनी बेटी के लिए एक पिता की याचना (5:21-24)[18]

[21]जब यीशु फिर नाव से पार गया, तो एक बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठी हो गई। वह झील के किनारे ही था कि [22]याईर नामक आराधनालय के सरदारों में से एक आया, और

उसे देखकर उसके पाँवों पर गिरा, [23]और यह कहकर उससे बहुत विनती की, ''मेरी छोटी बेटी मरने पर है: तू आकर उस पर हाथ रख कि वह चंगी होकर जीवित रहे।'' [24]तब वह उसके साथ चला; और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, यहाँ तक कि लोग उस पर गिरे पड़ते थे।

आयत 21. यीशु फिर नाव से पार गया। गलील में वापसी के समय यीशु को आराम करने का कुछ समय मिल गया होगा; परन्तु जब वह किनारे पर पहुंचा एक और **बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठी हो गई।**

आयतें 22, 23. याईर नामक आराधनालय के सरदारों में से एक आया, ... उसके पाँवों पर गिरा। आराधनालय का प्रबन्ध नेतृत्व के मामले में कुछ कुछ कलीसिया के जैसा है। उसे प्राचीनों के एक समूह के द्वारा चलाया जाता था और याईर उस समूह का सदस्य था। दूसरे विश्वासी यहूदियों की तरह वह भी उत्सुकता से मसीहा की राह देख रहा होगा। कोई संदेह नहीं कि बहुत से लोग अचम्भित हो रहे थे कि क्या यीशु यह मसीहा हो सकता है, चाहे अधिकतर यहूदी अगुओं द्वारा उसका विरोध किया जाता था।

याईर के मन में यीशु के प्रति यदि कोई पूर्वधारणा थी तो वह अपनी बच्ची की आवश्यकता के कारण गायब हो गई थी। उसने यीशु से विनती की, **''मेरी छोटी बेटी मरने पर है: तू आकर उस पर हाथ रख कि वह चंगी होकर जीवित रहे।''** लूका 8:41, 42 कहता है कि उसकी इकलौती बेटी थी, जो लगभग बारह वर्ष की थी (देखें मरकुस 5:42)। मत्ती 9:18 कहता है कि वह ''अभी मरी'' थी (ASV)। या तो याईर को यह उम्मीद थी कि अब तक वह मर चुकी होगी, या उसे पता था कि वह मरने वाली है। उसने यीशु से उसे चंगा करने की भीख मांगी।

आयत 24. यीशु तुरन्त **उसके साथ चला**, परन्तु **बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली** जिससे उनका आगे बढ़ना धीमा हो गया।

''तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है'' (5:25-34)[19]

[25]एक स्त्री थी, जिसको बारह वर्ष से लहू बहने का रोग था। [26]उसने बहुत वैद्यों से बड़ा दु:ख उठाया, और अपना सब माल व्यय करने पर भी उसे कुछ लाभ न हुआ था, परन्तु और भी रोगी हो गई थी। [27]वह यीशु की चर्चा सुनकर भीड़ में उसके पीछे से आई और उसके वस्त्र को छू लिया, [28]क्योंकि वह कहती थी, ''यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूँगी, तो चंगी हो जाऊँगी।'' [29]और तुरन्त उसका लहू बहना बन्द हो गया, और उसने अपनी देह में जान लिया कि मैं उस बीमारी से अच्छी हो गई हूँ। [30]यीशु ने तुरन्त अपने में जान लिया कि मुझ में से सामर्थ्य निकली है, और भीड़ में पीछे फिरकर पूछा, ''मेरा वस्त्र किसने छुआ?'' [31]उसके चेलों ने उससे कहा, ''तू देखता है कि भीड़ तुझ पर गिरी पड़ती है, और तू कहता है कि किसने मुझे छुआ?'' [32]तब उसने उसे देखने के लिये जिसने यह काम किया था, चारों ओर दृष्टि की। [33]तब वह स्त्री यह जानकर कि मेरी कैसी भलाई हुई है, डरती और काँपती हुई आई, और उसके पाँवों पर गिरकर उससे सब हाल सच-सच कह दिया। [34]उसने उससे कहा, ''पुत्री, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है: कुशल से जा, और अपनी इस बीमारी

से बची रह।''

आयतें 25-28. याईर के घर यीशु के जाने में **एक स्त्री जिसको बारह वर्ष से लहू बहने का रोग था** से रुकावट आ गई थी। यह स्त्री **बारह वर्ष** से न केवल शारीरिक रूप में परेशान थी बल्कि उसे अलग-अलग यहूदी रस्मों से भी दूर रहना पड़ता होगा (लैव्य. 15:25-30)। रस्मी तौर पर अशुद्ध होने के कारण, वह दूसरों को छू नहीं सकती थी।[20]

मरकुस हमें बताता है (जबकि वैद्य लूका ने यह विवरण नहीं दिया) कि इस महिला ने **बहुत वैद्यों** को **अपना सब माल व्यय कर** दिया था **पर उसे कुछ लाभ न हुआ था** बल्कि **और भी रोगी हो गई थी**[21] (देखें लूका 8:43)। **वह यीशु की चर्चा सुनकर भीड़ में उसके पीछे से आई और उसके वस्त्र को छू लिया।** उसके विश्वास और मायूसी ने उसे व्यवस्था का उल्लंघन करने पर विवश कर दिया था और यीशु ने इस बात के लिए उसकी कोई आलोचना नहीं की।

यहूदी ताल्मुड में इस महिला के रोग की समस्या के ग्यारह से अधिक उपचार बताए गए थे। उनमें से कुछ तो शक्तिवर्धक थे जबकि दूसरे उपचार अंधविश्वास थे। जैसे कि गर्मी के मौसम में मलमल के कपड़े में शुतरमुर्ग के अंडे और सर्दी के मौसम में सूती कपड़े में राख रखना।[22] उसका रोग ऐसा था कि इसे दूसरों को बताया नहीं जा सकता था, इसलिए उस महिला ने चुपके से यीशु का स्पर्श करने की कोशिश की; **क्योंकि वह कहती थी, ''यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूँगी, तो चंगी हो जाऊँगी।''**

हो सकता है कि रूढ़िवादी यहूदी के रूप में यीशु अपने वस्त्र की ''छोर'' पर चार झालरें लगवाता हो। ऐसा गिनती 15:38-40 के आधार पर किया जाता था; यहूदी लोग यह दर्शाने के लिए झालरें पहनते थे कि वे परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं। यदि यीशु झालरें पहनता था तो हो सकता है कि उस स्त्री ने उसकी एक झालर को छुआ हो। अलग-अलग संस्करणों में मत्ती 9:20 और लूका 8:44 यीशु के वस्त्र के ''आंचल'' या ''किनारे'' की बात करते हैं। AB और HCSB में ''झालर'' का विचार डाला गया है।

आयत 29. ऐसा लगता है कि यह नहीं हो सकता था कि कोई यीशु को छुए और वह शुद्ध हुए और चंगा हुए बिना रह जाए। जब परेशान लोग मसीह के सम्पर्क में आए तो उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि उनके साथ क्या हुआ। बीमार स्त्री यीशु का वस्त्र छूते ही बता सकती थी कि वह चंगी हो गई है: **और तुरन्त उसका लहू बहना बन्द हो गया, और उसने अपनी देह में जान लिया कि मैं उस बीमारी से अच्छी हो गई हूँ।** अब वह कमजोर नहीं रही थी क्योंकि उसके शरीर में ताकत आ गई थी। उसे ''आंशिक चंगाई'' नहीं मिली थी जैसा कि आज ''विश्वास से चंगाई'' के मामलों में होता है।[23]

आयतें 30, 31. उस स्त्री ने यीशु को छूने की हिम्मत नहीं की बल्कि उसने यह सोचते हुए कि यीशु को उसके स्पर्श का पता चलने दिए बिना यदि वह उसे छू लेती है तो वह चंगी हो जाएगी, क्योंकि भीड़ उसके चारों ओर उसे दबा रही थी। इसका उल्टा होने पर उसे और यीशु के चेलों को कितनी हैरानी हुई! **यीशु ने तुरन्त अपने में जान लिया कि मुझ में से सामर्थ्य निकली है।** यीशु को पता था कि उसने उसे छुआ है क्योंकि उसे महसूस हो गया था कि उसमें से शक्ति निकली है।

एक अरसे से हम सुनी सुनाई सूचना (जैसे हमें मिली है) पर आधारित विश्वास को देखते, परन्तु इस स्त्री को कार्यवाही करने के लिए उकसाने के लिए यह काफ़ी थी जिससे उसे ज़बर्दस्त आशीष मिली। चाहे यीशु को भी पहले से उस स्त्री की योजनाओं का पता नहीं था, परन्तु परमेश्वर देख रहा था और उसने चंगाई होने दी। हो सकता है कि ऐसी चंगाई से यीशु में से ऊर्जा निकलती हो, क्योंकि वह आम तौर पर थक जाता था और उसे मनन और प्रार्थना के लिए समय चाहिए होता था। विश्वास के जवाब में निकली सामर्थ उसकी जानकारी के बिना नहीं हो सकती थी। ऐसा कोई संकेत नहीं दिया गया कि प्रेरितों के द्वारा चंगाई का काम किए जाने पर उनसे शक्ति निकली हो (प्रेरितों 3:7)।

यह महसूस करते हुए कि "उसमें से सामर्थ निकली है" यीशु ने **भीड़ में से पीछे फिरकर पूछा, "मेरा वस्त्र किसने छुआ?"** लोगों के बीच में मनवाने के लिए कि उसे चंगाई उसी ने दी है, और शायद प्रकट में मानने के लिए जिससे उसे उद्धार मिलना था, यीशु ने चाहा कि वह अपनी पहचान खुद बताकर सब लोगों के सामने अपने विश्वास की घोषणा करे। चेलों को उसकी मंशा पता नहीं थी। उन्होंने जवाब दिया, **"तू देखता है कि भीड़ तुझ पर गिरी पड़ती है, और तू कहता है कि किसने मुझे छुआ?"** उन्हें लगा कि उसके लिए यह प्रश्न पूछना मूर्खता वाली बात है। भीड़ में से हर ओर से लोग उसे छू रहे थे परन्तु दूसरे सब लोगों के धक्के और दबाव उसके साथ वह नहीं कर रहे थे जो चंगाई की खोज में विश्वास से उसे छूकर इस स्त्री ने किया। हमारा विश्वास इसी प्रकार से हमें उद्धार की ओर ले जाता है जब यह हमें मन फिराव के इरादे से भीड़ में से ले जाता है। हम विश्वास से अपने अंगीकार और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मे के लिए अपने आपको देने के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह तक पहुंच सकते हैं (रोमियों 10:9, 10; 6:3, 4, 17, 18)।

आयतें 32-34. बेशक यीशु को पता चल गया था कि उसे किस ने छुआ है, परन्तु जब तक वह स्त्री सामने नहीं आई तब तक वह भीड़ में देखता रहा। वह **डरती और कांपती हुई आई**, क्योंकि पूर्वी लोगों में स्त्री के लिए सबके सामने आकर बोलना उपयुक्त नहीं था। वह जानती थी कि कोई कठोर रब्बी उसे छूने के लिए डांट देगा। उसे मिली नई नई सेहत ने उसे बोलने का साहस या जानकारी को छुपाने का डर दे दिया होगा, क्योंकि वह **आई, और उसके पाँवों पर गिरकर उससे सब हाल सच-सच कह दिया**। प्रभु के शांति देने वाले इन शब्दों से उसे बड़ी हिम्मत मिली होगी: **"पुत्री, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।"**

इस स्त्री के विश्वास के आधार पर उसकी चंगाई यह सुनिश्चित नहीं करती कि यदि हमारा विश्वास इतना हो तो हमें शारीरिक रूप में चंगाई मिल जाएगी। परन्तु पुराने नियम वाले नामान (2 राजा. 5:11) या नये नियम वाले थोमा (यूहन्ना 20:24, 25) जितना थोड़ा विश्वास भी अमल किए जाने पर हमारे अनन्त प्राणों को बचाने के लिए काफ़ी है। यीशु सर्वदा एक सा है (इब्रा. 13:8),[24] चाहे वह आज हमारे संसार में उस तरह से काम नहीं करता जैसे पृथ्वी पर रहने के समय किया करता था। उद्धार के उसके बड़े उपहार को ग्रहण करने के लिए हमारे लिए सुसमाचार की शर्तों को मानना आवश्यक है।

जिस स्त्री ने यीशु को छुआ उसका विश्वास कायर था, परन्तु उससे काम करवाने के लिए काफ़ी था। यीशु ने विश्वास के कार्य का जवाब दिया, चाहे उसका विश्वास कितना भी कमज़ोर

था। उसकी बात ''**कुशल से जा**'' यह सुझाव देती है कि उसके प्राण को भी चंगाई दी गई थी। यह स्त्री हर तरीके से सम्पूर्ण हो गई थी।

''मत डर; केवल विश्वास रख'' (5:35-43)[25]

[35]वह यह कह ही रहा था कि आराधनालय के सरदार के घर से लोगों ने आकर कहा, ''तेरी बेटी तो मर गई, अब गुरु को क्यों दुःख देता है?'' [36]जो बात वे कह रहे थे, उस को यीशु ने अनसुनी करके, आराधनालय के सरदार से कहा, ''मत डर; केवल विश्वास रख।'' [37]और उसने पतरस और याकूब और याकूब के भाई यूहन्ना को छोड़, अन्य किसी को अपने साथ आने न दिया। [38]आराधनालय के सरदार के घर में पहुँचकर, उसने लोगों को बहुत रोते और चिल्लाते देखा। [39]तब उसने भीतर जाकर उनसे कहा, ''तुम क्यों हल्ला मचाते और रोते हो? लड़की मरी नहीं, परन्तु सो रही है।'' [40]वे उसकी हँसी करने लगे, परन्तु उसने सब को निकाल कर लड़की के माता-पिता और अपने साथियों के साथ भीतर, जहाँ लड़की पड़ी थी, गया। [41]और लड़की का हाथ पकड़कर उससे कहा, ''तलीता कूमी!'' जिसका अर्थ है, ''हे लड़की, मैं तुझ से कहता हूँ, उठ!'' [42]और लड़की तुरन्त उठकर चलने फिरने लगी; क्योंकि वह बारह वर्ष की थी। इस पर लोग बहुत चकित हो गए। [43]फिर उसने उन्हें चिताकर आज्ञा दी कि यह बात कोई जानने न पाए और कहा, ''इसे कुछ खाने को दो।''

यदि याईर को उसके आगे बढ़ने को धीमा कर रही भीड़ ने निराश किया, तो उस स्त्री की चंगाई से जिसने विनती का एक शब्द भी नहीं बोला, उसके विश्वास को बढ़ा दिया होगा। यीशु के उस स्त्री को जिसने केवल उसका पल्ला छुआ था, जो कुछ हुआ था, देखने पर उसका विश्वास मज़बूत हुआ। इस अद्‌भुत आश्चर्यकर्म को देखने के बाद निश्चय ही उसके मित्रों द्वारा आकर उसे बताने पर कि उसकी बेटी मर चुकी है याईर पूरी तरह से निराश नहीं हुआ होगा। उस यहूदी अधिकारी का काफ़ी विश्वास था, उसका यहां तक विश्वास था कि मनुष्य का पुत्र मरे हुओं को जिला सकता है।

आयतें 35, 36. यीशु के उस स्त्री से बातें करते हुए, याईर को यह संदेश मिला, ''**तेरी बेटी तो मर गई, अब गुरु को क्यों दुःख देता है?**'' सेवक के नैराश्य को यीशु द्वारा याईर से कही बात से पूरा कर दिया गया, ''**मत डर; केवल विश्वास रख।**'' यह परमेश्वर के वचन पर भरोसा रखने का उपदेश था। यीशु कह रहा था, ''संदेहवादियों को अपने विश्वास को निकालने मत दो।'' साफ़ है कि याईर ने इसे दिल से लगा लिया और पूरी तरह से विश्वास किया।

बाइबल का विरोध भय और विश्वास के बीच पाया जाता है क्योंकि विश्वास भय पर जय प्राप्त कर सकता है। कोई भी व्यक्ति उस व्यक्ति के जितना निडर नहीं है जो गहरे विश्वास के साथ रहता है। उसे पहले से यीशु और उसके वचन में बड़ा भरोसा है। मृत्यु आशा को खत्म करने वाली और भय उत्पन्न करने वाली दिखाई देती है, परन्तु मसीह के सामने यह ठहर नहीं सकती।

मत्ती 9:18 दिखाता है कि उस पिता का विश्वास पहले से था: ''वह उनसे ये बातें कह ही रहा था, कि देखो, एक सरदार ने आकर उसे प्रणाम किया और कहा, 'मेरी पुत्री अभी मरी है,

परन्तु चलकर अपना हाथ उस पर रख, तो वह जीवित हो जाएगी।''' मरकुस में संकेत यह है कि जब याईर अपने घर से निकला तो लड़की मर रही थी; और उसने यह मान लिया कि अब तक वह मर चुकी होगी, जिसकी पुष्टि अब 5:35 में परिवार की ओर से यह समाचार मिलने से हो गई। यीशु की सामर्थ में चाहे उसका मज़बूत विश्वास था, परन्तु यीशु के उस पर हाथ रखकर उसे चंगा करने की उसकी इच्छा में उसकी आत्मिक उन्नति में कुछ कमी या कुछ रह जाने का पता चलता है।[26] तीसरी सदी ईसा पूर्व के एक कवि ने लिखा, ''जीवतों के लिए आशा है, मरे हुओं के लिए कोई आशा नहीं।''[27] यीशु ने मरे हुओं की अवस्था को भी आशा में बदल दिया।

लूका 8:50 में जोड़ा गया कि यीशु ने कहा, ''तो वह बच जाएगी।'' यीशु को पहले से पता होना कि वह इस लड़की को जिला सकता है अपने आप में सर्वोच्च शक्ति थी। मसीह के भविष्य के ज्ञान या सामर्थ की कोई सीमा नहीं है (मत्ती 28:18)।

मरकुस 5:36 में ''केवल विश्वास'' वाक्यांश निष्क्रिय या कुछ न करने के विश्वास के लिए नहीं कहता है। इस आदमी ने यीशु के पास आकर उसके सामने आदर में झुककर और उसके साथ घर वापस जाकर, ज़बर्दस्त विश्वास दिखाया था। उसके विश्वास का प्रतिफल बहुतायत से मिलना था। परन्तु केवल विश्वास के द्वारा उसका उद्धार के लिए कोई तर्क नहीं है। ''केवल विश्वास रख'' की यीशु की आज्ञा इस आदमी की बेटी के जिलाये जाने की विशेष घटना से सम्बन्धित है, न कि हर किसी के अनन्त उद्धार से। इसके अलावा याईर ने यीशु से उसे चंगा कराने की विनती करके पहले ही अपने मज़बूत विश्वास को दिखा दिया था। यानी उसका विश्वास ''कर्मों बिना'' नहीं था (याकूब 2:26)। याकूब 2:14 में याकूब ''उद्धार करने वाले विश्वास'' की बात कर रहा था। कुछ लोग यह तर्क देते हुए कि याकूब केवल ''अपने कामों से अपने विश्वास को दिखाने'' की बात कर रहा था इस विश्वास ''कर्मों'' के होने का इनकार करते हैं। याकूब अब्राहम को उदाहरण के रूप में इस्तेमाल कर रहा था और ''धर्म गिना गया'' शब्द उद्धार के लिए था (याकूब 2:24)।

याईर की बेटी के चंगा होने के साथ-साथ भीड़ में स्त्री के चंगा होने के इन दोनों आश्चर्यकर्मों में विश्वास आवश्यक था। यीशु ने कहा कि वह स्त्री अपने विश्वास को मान ले। उसका विश्वास बहुत था परन्तु उसकी यह सोच गलत थी कि यीशु को पता चले बिना उसे चंगाई मिल जानी थी। परन्तु चंगाई के लिए हर बार विश्वास आवश्यक नहीं था। (देखें लूका 22:51, जहां महायाजक के सेवक का कान दोबारा से लगा दिया गया, और यूहन्ना 11:43, 44, जहां एक मुर्दा जी उठा।) ऐसे मामलों में यीशु ने आश्चर्यकर्म के लाभ उठाने वाले व्यक्ति के किसी विश्वास के जवाब के बजाय तरस के कारण आश्चर्यकर्म किया था।

आयत 37. यीशु के साथ **पतरस, याकूब**, और **यूहन्ना** को छोड़ किसी और को नहीं जाने दिया गया। हम समझ सकते हैं कि पतरस को जो कि मुख्य प्रवक्ता था, क्यों जाने दिया गया। यूहन्ना ''जिससे यीशु प्रेम रखता था'' (यूहन्ना 20:2; 21:7, 20; देखें 13:23; 19:26) को स्वाभाविक रूप में मिला लिया गया। परन्तु याकूब को क्यों चुना गया? क्या इसलिए कि उसने पवित्र शहादत में अपना लहू बहाने वालों में सबसे पहला होना था (प्रेरितों 12:2)? एक और कारण हो सकता है कि यदि उसके भाई यूहन्ना को जाने दिया गया तो उसे छोड़ा नहीं जाना चाहिए।

आयतें 38-40. जब वे घर के अंदर गए, तो वहां **हल्ला** मचा हुआ था। जो लोग **रोते और चिल्लाते** थे वे मातम के लिए भाड़े पर लाए गए पेशेवर विलाप करने वाले थे, जैसा कि यहूदियों में आम होता था। वे विलाप करने के कठोर नियमों का पालन करने में निपुण थे; उनकी रस्मों में छाती पीटना, बाल नोचना और कपड़े फाड़ना शामिल था। तीस दिनों के बाद विलाप में फटा कपड़ा सिला जा सकता था। विलाप की आवाज़ को प्रभावशाली बनाने के लिए भाड़े पर बांसुरी बजाने वाले बुलाए जाते थे। (गरीब से गरीब आदमी की पत्नी के लिए कम से कम दो लोग आवश्यक होते थे।) विलाप करने वाला जूते नहीं पहन सकता था। अय्यूब, यिर्मयाह, या विलापगीत की पुस्तकों में से पढ़ा जा सकता था, परन्तु व्यवस्था में से नहीं। घर (और उसके दोनों और के तीन घरों) में किसी भी प्रकार का पानी नहीं रहने दिया जाता था। क्योंकि माना जाता था कि मृत्यु के दूत ने पानी में डूबी तलवार के साथ मारा है। विलाप करने वाले के लिए आराधनालय में जाने की परम्परा थी जहां सब लोग कहते, ''धन्य है वह जो विलाप करने वाले को शांति देता है।''[28] इस औपचारिक दुःख से उस कपट का पता चलता था जो यहूदी जीवन शैली में पाया जाता था।

यीशु की घोषणा कि ''**लड़की मरी नहीं परन्तु सो रही है**'' विलाप करने वालों की भीड़ मज़ाक उड़ाने लगी। **वे उसकी हंसी करने लगे।** लगता है कि यीशु को गूढ़ बातें करने में आनन्द आता था, जैसे कि कुछ दृष्टांतों में, जिससे सुनने वाले और गम्भीरता से सोच सकते थे।

यीशु की उपस्थिति में कोई मृत्यु नहीं हो सकती थी। उसने कई बार मृत्यु को नींद बताया, और इसी भाषा का इस्तेमाल प्रेरितों के द्वारा किया गया (यूहन्ना 11:11-14; 1 थिस्स. 4:13-18)। आत्मा सोती नहीं है, क्योंकि यह तो प्रभु के साथ होने के लिए देह का त्याग करती है (देखें फिलि. 1:23; याकूब 2:26)। पुनरुत्थान की प्रतीक्षा में देह को ही नींद आती है (देखें 1 कुरि. 15:51, 52)। ''सोना'' शब्द मृत्यु में होने वाली बात के लिए तसल्ली देने वाला रूपक है। प्राचीन मूर्तिपूजक एंग्लो-सैक्सन लोग अपने मुर्दों को ''कब्रिस्तान'' (graveyard) अर्थात ऐसी जगह में दफ़नाते थे जहां सुराख ''अंकित किए'' या खोदे जाते थे; परन्तु μνημείων (*mnēmeiōn*) से लिए यूनानी शब्द ''cemetery'' (κοιμητήριον, *koimētērion*) का अनुवाद आम तौर पर ''sepulcher'' ''सोने के लिए लेटने की जगह'' का संकेत देता है।

परन्तु उसने सब को निकाल कर लड़की के माता-पिता और अपने साथियों के साथ भीतर, जहाँ लड़की पड़ी थी, गया। भीड़ को बाहर रखने से इन गवाहों ने यह सुनिश्चित कर पाना था कि याईर की बेटी मर गई थी और यह कि आश्चर्यकर्म हुआ था। भीड़ पहले लाचार थी। तीन गवाहों ने व्यवस्था के अनुसार होने वाली बातों को सच साबित कर पाना था।[29] तीनों प्रेरितों ने पहले ही यीशु को बहुत से अद्‌भुत काम करते हुए देखा था, और उन्होंने कोई ऐसी बात नहीं करनी थी जिस पर सवाल उठाया जा सकता। इन तीनों को शायद उनके आत्मिक रूप में संवेदनशील होने के कारण चुना गया था। इन चुने हुए तीनों की बात को स्वीकार करना दूसरों का फर्ज होना था, वैसे ही जैसे उन्होंने रूपांतर (मत्ती 17:1-8) और गतसमनी में यीशु की प्रार्थनाओं के बारे में उनकी बात मानी। विलाप करने वाले लोगों के साथ जिन्होंने कहा कि लड़की मर चुकी है, इन प्रेरितों की गवाही से बड़ा सबूत मिलना था कि एक अद्‌भुत आश्चर्यकर्म हुआ है।

आयत 41. यीशु ने लड़की का हाथ पकड़ा और उससे कहा, ''**तलीता कूमी!**'' **जिसका**

अर्थ है, ''हे लड़की, मैं तुझ से कहता हूँ, उठ!'' ''तलीता कूमी'' प्राचीनतम यूनानी हस्तलेखों के वाक्यांश का लिप्यंत्रण है। मूल शब्द अरामी भाषा में, यानी उस भाषा में, जिसे दासत्व के समय यूनानियों द्वारा अपनाया गया। आम बोल चाल में चाहे यूनानी भाषा बोली जाती है, परन्तु अरामी भाषा घरों में, विशेषकर गलील में बोली जाने वाली भाषा बनी रही।[30] यह हो सकता है कि यरूशलेम में, विशेषकर याजकों में कुछ सीमा तक इब्रानी भाषा रही। यीशु यूनानी भाषा में उपदेश देता था या अरामी में? हम जानते हैं कि कई बार वह अरामी भाषा में बात करता था (देखें मरकुस 7:34; 14:36; 15:34)। सभी प्रेरितों ने यूनानी भाषा में लिखा जो यह दिखाता है कि उत्तम गुरु ने यूनानी के इस्तेमाल की स्वीकृति दी। परन्तु, यहां पर, यीशु के लिए उसी भाषा का इस्तेमाल करते हुए जो उसके घर में बोली जाती हो उस लड़की से बात करना स्वाभाविक था।

आयत 42. और लड़की तुरन्त उठकर चलने फिरने लगी। यीशु के एक शब्द से लाज़र मुर्दों में से जी उठा। उस लड़की को जिलाने और अपनी सामर्थ का इस्तेमाल करने के लिए उसके हाथ का स्पर्श (5:41) काफ़ी था। देखने वाले सब लोग **बहुत चकित हो गए**। जो कुछ हुआ था उसे देखकर उसके माता-पिता और चेले चकित थे। मरकुस ने जैसा कि वह आम तौर पर करता था, यीशु के स्पर्श के परिणामों की आश्चर्यजनक तेज़ी को बताने के लिए **तुरन्त** εὐθύς (*euthus*) शब्द का इस्तेमाल किया।

आयत 43. यीशु ने **चिताकर आज्ञा दी कि यह बात कोई जानने न पाए**। वास्तव में, उसने अपने साथियों को बताया, ''इस बारे में चुप रहो!'' जहां तक हो सके यीशु आम तौर पर अनावश्यक उत्तेजना से बचने के लिए आश्चर्यकर्म करता था। वह चुपके से चंगाई देना चाहता था क्योंकि उसके कामों के बारे में बताने से उसके शत्रु उसे क्रूस पर चढ़ाने की जल्दी कर सकते थे। यीशु ने जब तक उसके अपने आपको प्रकट करने और मृत्यु का सामना करने का सही समय नहीं आया, तब तक यहूदिया में मृत्यु पर अपनी सामर्थ को सबके सामने नहीं दिखाया (यूहन्ना 11)।

जोश में माता-पिता यह भूल गए होंगे कि लड़की ने कितनी देर से खाना नहीं खाया था। उसे बल चमत्कार के द्वारा मिला था परन्तु फिर से स्वाभाविक प्रक्रियाएं आरम्भ होने पर उसे खाना चाहिए था। यीशु ने उन्हें डांटकर कहा **इसे कुछ खाने को दो**। यह आज्ञा फिर से हमारे प्रभु के तरस को दिखाती है।

प्रासंगिकता

जिस मसीह की हमें आवश्यकता है (5:1-13)

रात को गलील की झील पार करके यीशु पूर्वी तट पर आ गया। नाव से बाहर कदम रखने पर वह गिरासेनियों (या गदरेनियों, पास के गदारा नामक महत्वपूर्ण नगर के नाम से) के इलाके में था।

लगभग उसी समय, यीशु और उसके प्रेरितों को एक आदमी मिला जिसमें अशुद्ध आत्माएं थीं। यह आदमी पास की कब्रों में रहता था। उसमें अशुद्ध आत्माएं थीं जिससे उसमें असाधारण शक्ति आ गई थी। उसे कई बार चाहे ज़ंजीरों से बांधा गया था, परन्तु अशुद्ध आत्माएं उसे हर बंधन को तोड़ देने के योग्य बना देती थीं। वह इतना खूंखार बन गया था कि कोई उसे बांध नहीं

सकता था। वह इधर-उधर घूमता रहता और नंगा रहता था। उसका इलाका, उसका घर, कब्रों में था। दिन रात वह इधर उधर घूमता, चिल्लाता, अपने आपको पत्थरों से ज़ख़्मी करता और उस इलाके में से गुज़रने वाले हर व्यक्ति का विरोध करता।

मत्ती 8:28 से पता चलता है कि दुष्टात्माओं से ग्रस्त ये दो जन थे। मरकुस 5:2 और लूका 8:27 एक व्यक्ति पर ध्यान देते हैं जो अधिक प्रसिद्ध था और यीशु के साथ उसकी बातचीत हुई। हम उसी पर ध्यान देंगे।

दुष्टात्मा से ग्रस्त इस व्यक्ति ने जब यीशु को देखा तो वह तुरन्त चिल्लाते हुए उसके पास आया। यीशु की पूरी सेवकाई के दौरान, दुष्टात्माएं उसे पहचान लेती थीं और परमेश्वर का पुत्र करके मानती थीं। उन्होंने इस आदमी से यही करवाया। वह चिल्लाया, ''हे यीशु, परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र, मुझे तुझ से क्या काम? मैं तुझे परमेश्वर की शपथ देता हूँ कि मुझे पीड़ा न दे'' (5:7)।

साफ है कि यीशु ने जब दुष्टात्मा के सताए इस आदमी को देखा तो वह दुष्टात्माओं को उसमें से बाहर निकल आने की आज्ञा देने लगा। उसके शब्द वास्तव में ये थे, ''हे अशुद्ध आत्मा, इस मनुष्य में से निकल आ!'' (5:8)। उन्हें जो उसके साथ थे, शायद उसका पूरा अर्थ समझाने के लिए कि वह क्या करने वाला था, यीशु ने रुककर पूछा ''तेरा क्या नाम है?'' (5:9)। उस आदमी में से दुष्टात्माएं बोलने लगीं और उन्होंने उससे कहा, ''मेरा नाम सेना है; क्योंकि हम बहुत हैं'' (5:9)। यह समझते हुए कि उन्हें निकाला जा रहा है वे यीशु के सामने गिड़गिड़ाने लगीं यानी उन्होंने उससे क्योंकि याचना की ''हमें इस देश से बाहर न भेज'' (5:10)। पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था, और दुष्टात्माओं का ध्यान इन जानवरों पर गया। दुष्टात्माओं ने यीशु से गिड़गिड़ाते हुए कहा, ''हमें उन सूअरों में भेज दे कि हम उनके भीतर जाएँ'' (5:12)। मरकुस 5:13 कहता है कि यीशु ''ने उन्हें आज्ञा दी और अशुद्ध आत्मा निकलकर सूअरों के भीतर पैठ गईं और झुण्ड, जो कोई दो हज़ार का था, कड़ाड़े पर से झपटकर झील में जा पड़ा।''

अध्याय 5 में हम यीशु की सामर्थ को दुष्टात्माओं, बीमारी और मृत्यु पर अधिकार रखने के रूप में देखते हैं। इस अवसर पर साफ़ तौर पर यीशु का सामना दुष्टात्माओं से था। शायद उन्हें यीशु के जीवन और सेवकाई के दौरान विशेष तौर पर दिखाई देने की अनुमति मिली थी ताकि वह उनके ऊपर अपनी सामर्थ को दिखा सके। जब तक हम स्वर्ग में नहीं जाते तब तक हमें दुष्टात्माओं की बातों का पता नहीं चल सकता, परन्तु इस विवरण की बात बिल्कुल स्पष्ट है। यह कहानी मसीह की वर्णन से बाहर सामर्थ को दिखाती है। यहां, हम कैसी सामर्थ को देखते है?

1. जीवन के प्रभु, इस संसार और अदृश्य संसार के प्रभु के रूप में यीशु *सर्वशक्तिमान* है। जब वह वहां पर पहुंचा तो दुष्टात्माओं को मालूम था कि वह कौन है और वह क्या कर सकता है। दुष्टात्माओं की संख्या कोई मायने नहीं रखती। उसके एक शब्द से दुष्टात्माएं भाग गईं, उनकी सारी सेना भाग गई। यीशु के सामने ये दुष्टात्माएं, जिन्होंने आलौकिक सामर्थ को दिखाया था, बेबस थीं।

बड़ी शक्ति का वर्णन कौन कर सकता है? कोई नहीं। बड़ी शक्ति किसी भी सांसारिक शक्ति से जिसे हम जानते ऊपर हैं। उसके लिए जिसके पास बड़ी शक्ति है उसके लिए कहा जा सकता है, ''क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी

या अनदेखी ...'' (कुल. 1:16)। पौलुस की यह बात साफ़ तौर पर यीशु के लिए कही गई है।

2. यह वचन दिखाता है कि यीशु के पास *निर्मल शक्ति* है। दुष्टात्माओं में भी शक्ति है; परन्तु यह अशुद्ध है जो कि बुराई को समर्पित है। दुष्टात्माओं को ''अशुद्ध'' कहा गया है क्योंकि उनका काम शैतान के काम के साथ मेल खाता है। पीड़ित आदमी में हम उनके काम के परिणामों को देख सकते हैं। दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्ति बुरा, ख़तरनाक, नंगा, वहशी, और व्यवहार और दिखने में गंदा था।

जब यीशु ने उस आदमी के साथ जो दुष्टात्माओं से ग्रस्त था, अपना काम पूरा किया तो वह कपड़े पहने हुए, शांत, समझदार और मिशनरी बनने के लिए तैयार बैठा था। अपनी पूरी सेवकाई में यीशु ने कभी किसी का दिल नहीं दु:खाया। वह लोगों को चंगाई देता, मुर्दों को जिलाता, टूटे दिल वालों को तसल्ली देता, और उनकी समझ उन्हें लौटाता रहा। उसकी सामर्थ में कोई गुप्त मंशा नहीं है; वह हमेशा इसका इस्तेमाल प्रेम करने, लोगों को आराम देने और बचाने के लिए करता है।

3. *यीशु सामर्थ है।* उसे उस सामर्थ को जिसे वह दिखाता है, पाने के लिए सामर्थ के किसी देने वाले के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वरत्व का दूसरा सदस्य होने के कारण वह स्वयं सामर्थ है। दुष्टात्मा किससे डरते थे? वे यीशु की सामर्थ से डरते थे, परन्तु विशेषकर वे *उसी से* डरते थे!

दुष्टात्माओं को पता था कि यीशु उनके साथ जो चाहे कर सकता है। उन्हें इस बात की समझ थी कि वे तकलीफ़देह जगह पर जाने वाले हैं। वे अपने अंत को जानते थे। उन्होंने यीशु को उन्हें पास के सूअरों के झुण्ड में भेज देने को कहा। वे जानते थे कि वह केवल एक शब्द से यह अनोखा बदलाव कर सकता है।

आइए देखते हैं कि यीशु ने क्या किया और इसे कैसे किया। मरकुस ने कहा कि ''यीशु ने उन्हें आज्ञा दी'' कि सूअरों में चले जाएं, जो भागकर झील में चले गए और डूब गए (5:13)। फिर से, हम नहीं जानते कि उसने दुष्टात्माओं के साथ ऐसा क्यों किया। बेशक उत्तर का कुछ भाग यह है कि उसने दुष्टात्माओं के संसार पर अपने नियन्त्रण और शक्ति को दिखाया ताकि हम अच्छी तरह से इसे जान सकें।

निष्कर्ष: हमें यह प्रश्न पूछते रहना आवश्यक है कि ''यीशु कौन है?'' यह आवश्यक है कि हम इस प्रश्न को तब तक पूछते रहें जब तक हमें वह उत्तर नहीं मिल जाता जो बाइबल में दिया गया है। इस हवाले में यीशु की सामर्थ हमें उस प्रश्न के उत्तर की ओर ले जाती है। परमेश्वर के पुत्र को छोड़ और किस्में यह सामर्थ हो सकती थी जो दुष्टात्मा से ग्रस्त इस आदमी पर उण्डेली गई? यह पक्की बात है कि यह बड़ी सामर्थ है। जो कुछ हुआ कोई और सामर्थ उसे नहीं कर सकती थी। यह शुद्ध, धर्मी सामर्थ है: यीशु ने बुराई को दफ़ा हो जाने की आज्ञा दी, और यह दफ़ा हो गई। यह निजी सामर्थ है, ऐसी सामर्थ जैसी परमेश्वर के पुत्र को छोड़ कोई और नहीं दिखा सकता था। केवल एक आज्ञा से उसने दुष्टात्माओं के साथ निपट लिया।

पापियों को एक उद्धारकर्त्ता चाहिए, परन्तु उद्धार के इच्छुक लोगों को चाहिए कि वे किसी ऐसे वैसे को उद्धारकर्त्ता न मान लें। उन्हें सर्वशक्तिमान उद्धारकर्त्ता, धर्मी उद्धारकर्त्ता, एकमात्र उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता है जो अपने आज्ञा मानने वालों को परमेश्वर के पास ले जा सकता

है। यह दृश्य हमें दिखाता है कि यीशु वह सब कुछ है जो हमें एक अनन्त उद्धारकर्त्ता में चाहिए। उसका दुष्टात्माओं के संसार पर पूरा नियन्त्रण है। वह बुरी से बुरी शक्ति से जो हमारे विरोध में कभी आ सकता है, निपट सकता है; और निजी तौर पर वह हम से प्रेम करता है और हमें वह आश्रय देते हुए जिसे इस संसार या अदृश्य संसार की कोई सेना नष्ट नहीं कर सकती, सुरक्षा देने वाली अपनी बाहों में हमें छिपा लेता है।

पतरस के साथ-साथ आइए हम भी यह मान लें कि ''किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें'' (प्रेरितों 4:12)।

नये बने विश्वासी के लिए आज्ञा (5:1-20)

मरकुस 5:1-20 में हम एक दु:खी, उत्पीड़ित, जकड़े हुए, दुष्टात्मा से ग्रस्त आदमी के विवरण को देखते हैं। मत्ती 8:28 से हमें पता चलता है कि ये दो जन थे; परन्तु मरकुस का विवरण केवल एक पर, जोकि सम्भवतया दोनों में से अधिक प्रसिद्ध है, पर ध्यान देता है। उसका घर गिरासेनियों के किसी इलाके की कब्रों में था; और वह अपने छोटे से इलाके में वहां से गुज़रने वाले हर किसी को ललकारते हुए इधर उधर घूमता रहता था। वह उस इलाके का आतंक था, गिरासेनियों के लिए बड़ा भय था। पास के नगर के लोग उसके वहशीपन को और जंगलीपन को रोक नहीं पाए थे; वे उसे ज़ंजीरों से भी नहीं बांध पाए थे। उसके अंदर की दुष्टात्माएं उसे ज़बर्दस्त शक्ति दे रहीं थीं। लोग उससे घृणा करते थे, उसे मार डालना चाहते थे और उन्हें कोई इच्छा नहीं थी उसे एक सभ्य व्यक्ति में बदला देखे। इस आदमी के बारे में उनका मुख्य विचार यही होगा कि ''इससे पीछा कैसे छुड़ाएं ताकि हम उस इलाके में अपने सूअरों को आसानी से चरा सकें?''

जब यीशु इस जगह पर आया तो, उसने इस आदमी से सहानुभूतिपूर्वक बात की, दुष्टात्माओं को जिन्होंने उसे जकड़ा हुआ था, निकालकर भगा दिया। यीशु के इस आदमी को होश में लाने के बाद इलाके के लोगों ने निश्चय ही आतंक, बिगाड़, दुष्टता से जो इसमें थी चैन की सांस ली। यह आदमी पूरी तरह से बदल चुका था। दुष्टात्माओं से मुक्त होकर अब वह एक सभ्य, संतुष्ट, अनुशासित व्यक्ति बन गया था। असल में उसने यीशु से पूछा था कि क्या वह उसकी मिशनरी यात्राओं पर उसके साथ रहते हुए जा सकता है। एक अर्थ में यीशु ने उसे बताया, ''मेरा मिशन तेरे लिए है: 'अपने घर जाकर अपने लोगों को बता कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किए हैं''' (5:19)।

बेशक यीशु को इस आदमी को अपने साथ रखने में अच्छा लगना था, परन्तु उसने उसे बड़े प्रेम से वह करने को कहा जो यीशु के लिए, उसके लिए और दूसरों के लिए इससे भी अच्छा होना था। यीशु ने इस महत्वाकांक्षी मिशन का आरम्भ करने की अगुआई देने के लिए उसे निजी आज्ञा दी। वैसे ही हम भी पूछ सकते हैं, ''हे प्रभु, मैं तेरी सेवा करना चाहता हूं, परन्तु आरम्भ कहां से करूं?'' जो आज्ञा यीशु ने इस आदमी को दी उसमें सार्थक योजना है जिसे हम में से अधिकतर लोग मान सकते हैं।

1. यीशु ने उसे *चलने* का एक शब्द दिया। उसने कहा, ''जा।'' वह नहीं चाहता था कि उसका नया चेला केवल उसे देखे, उसके साथ साथ चले और कहे ''आमीन।'' वह चाहता था

कि यीशु के नाम में वह अपना एक आंदोलन चलाए। इस आदमी का मन इस बात से कि यीशु कौन है और उसने उसके लिए क्या किया है, आनन्द से भरा हुआ था और उसे यीशु की अच्छी बातें बताने में आगे बढ़चढ़कर भाग लेना आवश्यक था।

''जाओ'' शब्द यीशु द्वारा दी गई लगभग हर आज्ञा में पहला शब्द है। सीमित आज्ञा में सत्तर चेलों को जिन्हें उसने भेजा उसने इसी से आरम्भ किया (लूका 10:3); प्रेरितों को भेजते हुए अपनी आज्ञा के आरम्भिक भाग में उसने इसे शामिल किया (मत्ती 10:6); और मसीही युग में हमारे लिए ग्रेट कमीशन में उसने इसे रखा (मत्ती 28:19)। यीशु अपने चेलों से चाहता है कि वे बाहर जाकर दूसरों को, जिन्हें आवश्यकता है, उसके राज्य का संदेश बताएं।

2. यीशु ने इस आदमी को पूरा करने के लिए *मिशन* दिया: ''अपने घर जा।'' वह उससे अपने घर और अपने निकट के लोगों के साथ आरम्भ करने को कह रहा था। हर मिशनरी के लिए यह एक आवश्यक काम है यानी उसे घर से ही आरम्भ करना चाहिए। इसके अलावा इस नये चेले को उन लोगों के पास जाने को कहा जा रहा था जिनके पास यीशु ने नहीं जाना था। यह आदमी भी जो दुष्टात्माओं से पीड़ित था, अपने परिवार और मित्रों को यीशु के बारे में सचमुच में प्रभावशाली ढंग से बता सकता था।

3. यीशु ने इस आदमी को वह *संदेश* बताया जो उसे दूसरों को बताना था। उसने कहा, ''अपने लोगों को बता कि प्रभु ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किए हैं।'' यह आदमी इस बात का कि यीशु कौन है जीवित उदाहरण होना था। उसने बता पाना था, ''तुम जानते हो कि मैं कौन था और कैसा था। अब मुझे देखो। तुम देख सकते हो कि मैं बदल चुका हूं। परमेश्वर के पुत्र यीशु ने यानी मसीहा ने मुझे बदल दिया और मुझे यह नया जीवन दिया।''

आश्चर्यकर्म अपने आप में संदेश था; इसने अपना प्रचार खुद करना था। इस आदमी को केवल इसे लोगों को बताना था। केवल कोई अलौकिक जीव ही किसी अलौकिक घटना को कर सकता है। आश्चर्यकर्म को बना संवार कर बताना आवश्यक था। इस आदमी के अपने शुद्ध किए जाने की घटना को मिलाने पर यीशु के परमेश्वर होने का प्रचार हो जाना था। इस घटना से यह प्रमाण मिलना था कि यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है।

4. यीशु ने अपनी *दया* पर ज़ोर दिया। एक अर्थ में उसने कहा, ''मेरे बारे में और यह बता कि मैंने कैसे तुझ पर दया की है।'' परमेश्वर की दया की बात किए बिना सुसमाचार का प्रचार नहीं किया जा सकता। यह आदमी आसानी से यह बता सकता था कि यीशु उसे वैसा रहने नहीं देना चाहता था जैसा वह था।

यीशु हमारा दयालु उद्धारकर्त्ता है यानी वह हमें वह देता है जिसकी हमें आवश्यकता है, न कि जिसके हम हक्कदार हैं। शायद यह आदमी अपने पापों के कारण दुष्टात्माओं से ग्रस्त था और इसलिए वह दुष्टात्माओं से ग्रस्त रहने के योग्य था, परन्तु यीशु ने उसे छुड़ाकर उसे उद्धार दे दिया।

पौलुस यह कहते हुए परमेश्वर की दया में आनन्दित था कि,

> ... मैं तो पहले निन्दा करने वाला, और सताने वाला, और अन्धेर करने वाला था; तौभी मुझ पर दया हुई, ... यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिए जगत में आया, जिन में सब से बड़ा मैं हूं (1 तीमु.

1:12-15)।

दुष्टात्मा से ग्रस्त आदमी जिसे यीशु द्वारा उसके दु:खी जीवन से छुटकारा दिलाया गया था अपने बारे में वही बातें कह पाया होगा जो इन आयतों में पौलुस ने अपने बारे में कहीं।

निष्कर्ष: कहते हैं कि ''मसीह के साथ हर हृदय एक मिशनरी है, और मसीह के बिना हर हृदय मिशन क्षेत्र है।'' जब कोई यीशु का चेला बनने का निर्णय ले लेता है तो इस निर्णय में अपने आप में मिशनरी बनने की बात शामिल होती है।

मिशनरी काम को हम कहां से आरम्भ करें? क्या यीशु ने जो आज्ञा इस आदमी को दी थी वही आज्ञा हम में से अधिक लोगों पर भी लागू होती है। पहले तो हमें *गतिशील* होना यानी हमें ''जाना'' आवश्यक है। उद्धार हमें अनुग्रह में बैठने के लिए नहीं बल्कि अनुग्रह के साथ ले जाने के लिए अगुआई करता है। फिर हमें अपने *मिशन* का पता होना आवश्यक है: ''घर जा।'' हमें वहीं से आरम्भ करना चाहिए जहां हम रहते हैं। यदि हमारे परिवार के लोग और मित्र हमारे मन परिवर्तन के बाद हमारे अंदर आए बदलाव को नहीं बता सकते, तो दूर दूर के लोग भी हमारे अंदर यीशु को नहीं देख पाएंगे। हमारा *संदेश* है कि यीशु कौन है, उसने क्या किया है, और वह क्या कर सकता है। प्रचार करते हुए हमें प्रभु की *दया* को बताना आवश्यक है। उसका सुसमाचार उसकी दया के साथ आरम्भ होता है, दया से भरा है, और दया के साथ खत्म होता है।

आइए हम जितनी जल्दी बढ़ सकते हैं उतनी जल्दी बढ़ें; परन्तु अपने घर को अपना मिशन क्षेत्र बनाते हुए आरम्भ वहीं से करें, जहां हम हैं। आइए हम ठान लें कि यीशु और उसके उद्धार का संदेश ही हमारा संदेश होगा; और हर बात में परमेश्वर, मसीह और पवित्र आत्मा की दया पर ज़ोर दें। यह ऐसा मिशन कार्य है जिसे हर चेला कर सकता है और उसे करना चाहिए।

यीशु से चले जाने को कहना (5:14-20)

जब यीशु उस आदमी में से उन दुष्टात्माओं को निकाल रहा था जिन्होंने उसे जकड़ा हुआ था, तो दुष्टात्माओं ने उससे उन्हें पास की पहाड़ी पर चर रहे सूअरों में भेज देने की विनती की। बिना कोई व्याख्या दिए कि क्यों, यीशु ने उन्हें उस आदमी में से निकलकर सूअरों में जाने का अवसर दे दिया। मरकुस की बात कम शब्दों में है और सीधी है: ''अत: उसने उन्हें आज्ञा दी'' (5:13)।

इसके बाद जो कुछ हुआ वह चीखते और हुड़दंग मचाते सूअरों के ढेर जैसा दिखाई देता होगा। मरकुस ने उनकी गिनती दो हज़ार बताई। यह नासमझ झुण्ड ढलान से नीचे लुढ़कर झील में छपछपाने लगा। चरवाहों को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो पाया। देखते ही देखते उनकी रोज़ी रोटी छिन गई थी। जो हुआ था उसे बताने के लिए, सूअरों के रखवाले नगर की ओर भाग गए। नगर के लोगों ने चौंका देने वाली इस कहानी को सुना तो वे खुद देखने के लिए आ गए। बेशक भयभीत होकर उन्होंने चढ़ाई पर से नीचे देखा परन्तु उनकी आंखें खुली की खुली रह गईं, और ''... वे उसको जिस में दुष्टात्माएँ थीं, अर्थात् जिसमें सेना समाई थी, कपड़े पहिने और सचेत बैठे देखकर डर गए'' (5:15)। लूका 8:35 कहता है कि वह आदमी यीशु के चरणों में बैठा हुआ था।

जब इन लोगों की समझ में आया कि जो कुछ उन्हें बताया गया था वह सच था, तो उनके

रौंगटे खड़े हो गए और वे भय से कांपने लगे। ऐसी घटना उनकी समझ से बहुत परे की बात थी। परमेश्वर का पुत्र उनके पास आया था और उसने उनके बीच ईश्वरीय आश्चर्यकर्म किए थे। उसके इस प्रकार से आने को वे कैसे समझ सकते थे? उन्हें गवाही का केवल एक अंश मिला था और यदि उस गवाही को सही ढंग से न लिया जाता तो यह उनके बीच में विश्वास उत्पन्न करने के बजाय उनमें भय डाल सकता था।

इस आश्चर्यकर्म को अपनी आंखों से देखने वालों ने नगर से आने वालों के लिए पूरी कहानी बताने की कोशिश की। मरकुस के अनुसार, ''देखनेवालों ने उसका, जिसमें दुष्टात्माएँ थीं, और सूअरों का पूरा हाल उनको कह सुनाया'' (5:16)। परन्तु इन लोगों के लिए उसे जो वे सुन रहे थे, स्वीकार कर पाना कठिन था। उनके भय ने उनके मन में यदि कोई विश्वास पनपने वाला था, तो उसे कुचल डाला। भय से डरे हुए वे लोग यीशु से उनके इलाके से चले जाने की विनती करने लगे। वे कल्पना नहीं कर पाए कि इसके बाद क्या हो सकता है। अपने बीच में ऐसी सामर्थ को देखकर वे परेशान थे। उन्होंने जितनी जल्दी हो सके यीशु को भागने का निश्चय किया।

यह दृश्य सबसे बड़े आनन्द, अर्थात दुष्टात्मा से छुटकारे; गहरे डर, इस बात की चिंता कि यीशु क्या कर सकता है; सबसे बड़े लाभ, जिसे इसे पाने वाला ही समझ सकता है; और सबसे बुरे निर्णय, जो नगर के उन लोगों ने लिया जिन्होंने यीशु से चले जाने को कहा, से भरा हुआ है। यीशु से चले जाने को कहने का वास्तव में अर्थ क्या है?

1. जब कोई ऐसा करता है, तो यह समझ में आना आवश्यक है कि *दयावान उद्धारकर्त्ता* से जाने को कहा जा रहा है। इस व्यक्ति को परमेश्वर के दयावान पुत्र जिस प्रकार से यीशु ने चंगाई दी, और कोई नहीं दे सकता था। दुष्टात्मा से ग्रस्त आदमी की सहायता करना किसी आदमी के बस की बात नहीं है। उन दुष्टात्माओं के द्वारा जो उसमें थीं दिन-ब-दिन, उसे बर्बाद किया जा रहा था। उसकी बुरी हालत का इलाज संसार की कोई शक्ति नहीं कर सकती थी। परन्तु परमेश्वर के ईश्वरीय पुत्र यीशु ने इस आदमी को छुटकारे का एक शब्द कहा, और वह छूट गया। पलक झपकते ही वह पूरी तरह से होश में आ गया था।

2. जब यीशु से चले जाने को कहा जाता है तो *सच्चाई का कर्त्ता* जा रहा होता है। यीशु कौन है? यह वही है जो कह सकता है, ''मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता'' (यूहन्ना 14:6)। शैतान के साथ अपने गठबंधन में दुष्टात्माओं ने उस सब को जो बुरा, भ्रष्ट और प्राणों के लिए विनाशकारी है, दिखा दिया। इसके विपरीत यीशु उस सब का जो सच, सम्पूर्ण और सही है, मूर्त रूप है। वह उनके लिए जो बुराई की शक्तियों के अंधकार में कैद हैं, मृत्यु का अंत करके जीवन और अमरता देने के लिए आया। वह परमेश्वर से अलगाव की निराशा में खोए हुए लोगों को आशा देता है। दुष्टात्माओं और बुराई को भगाकर उसने इस आदमी को जो अंधकार में जी रहा था जीवन, प्रकाश और सच्चाई दी।

3. जब यीशु से चले जाने को कहा जाता है तो *बुराई को दण्ड देने वाले* को ठुकराया जा रहा होता है। दुष्टात्माएं मनुष्यजाति के बीच पहचान और नियन्त्रण चाहती थी। यदि नियन्त्रण बनाए रखने के लिए उनके लिए यीशु को मानना आवश्यक होता, तो उन्होंने खुलकर मान लेना था। उन्होंने मान लेना था कि ''यीशु परम प्रधान का पुत्र'' है (5:7)।

बुराई को दण्ड दिया जाना आवश्यक है। इसे यहां दण्ड दिया जाना चाहिए, और अनन्तकाल

में भी इसे दण्ड मिलेगा। जिन्हें समझ में नहीं आता कि बुराई क्या है और मनुष्यजाति के साथ क्या करती है, संसार में यह उनसे बदला लेगी और एक दिन उन्हें इसका दण्ड मिलेगा। यीशु हमें बुराई से छुड़ाने के लिए संसार में आया। हम उसे जाने न दें!

निष्कर्ष: संसार की सबसे बड़ी त्रासदियों में से एक तब होती है जब लोग यीशु से चले जाने को कहते हैं। यह केवल गलती नहीं बल्कि आपदा है, जिसके परिणाम अनन्तकालिक हैं।

इस दृश्य का उल्टा तब हुआ जब यूहन्ना 4 में एक सामरी स्त्री याकूब के कुएं पर यीशु से मिली। यह पता चलने पर कि यीशु कौन है उसने प्रमाण को मान लिया कि वह ही मसीहा है। उसने उसे चले जाने को नहीं बल्कि उसे रुकने को कहा। उसने भागकर नगर में हर मिलने वाले को बता दिया कि वह मसीहा से मिली है। उस नगर के लोगों ने आकर उसे कुछ समय के लिए उनके साथ रहने का निमन्त्रण दिया। यीशु के उनके साथ दो दिन तक रहने के बाद, उन्होंने उस स्त्री से जिसने उन्हें यीशु के बारे में बताया था कहा, ''अब हम तेरे कहने ही से विश्वास नहीं करते; क्योंकि हम ने आप ही सुन लिया, और जानते हैं कि यही सचमुच में जगत का उद्धारकर्ता है'' (यूहन्ना 4:42)।

जब कोई यीशु से चले जाने को कहता है, तो वह समय में और अनन्तकाल में सुनहरी अवसर खो देता जाता है। जब यीशु से रुकने को कहा जाता है, तो हमारे हाथों और हमारे मनों में आत्मिक और अनन्त दानों की आशिषों को छापा जा रहा होता है। हर व्यक्ति के लिए जिसे पवित्र शास्त्र की गवाही मिलती है, निर्णय लेना आवश्यक है कि यीशु से चले जाने को कहना है या रुक जाने को। आप और मैं क्या कहेंगे? इस संसार में विश्वासी जीवन और अनन्तकाल में उद्धार इसी निर्णय पर निर्भर है।

यीशु से विनती करना (5:21-24)

5:21-43 वाले लम्बे विवरण के आरम्भ में, हमें बताया गया है कि यीशु गलील की झील के पश्चिमी किनारे की ओर लौट गया था। गिरासेनियों के इलाके के लोगों ने यीशु से चले जाने को कहा; परन्तु कफ़रनहूम के लोगों ने अपने बीच में उसके थोड़ी देर के निवास में उसका फिर से स्वागत किया था। साफ़ है कि कफ़रनहूम के लोगों ने आनन्द और उत्साह से उसे ग्रहण किया। उन्होंने सुना था कि वह आ रहा है, और वे उससे प्रश्न पूछने और उससे सुनने की उममीद से किनारे पर थे। मरकुस ने कहा कि ''एक बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठी हो गई। वह झील के किनारे ही था'' (5:21)।

किनारे पर खड़े ये लोग शायद वही थे जिन्होंने यीशु के आश्चर्यकर्मों को देखा था या उनके साथ आश्चर्यकर्म हुए थे। कफ़रनहूम में उसने कई आश्चर्यकर्म किए थे। जो कुछ उसने उनके लिए किया था उसके लिए आभार और धन्यवाद करने की प्रेरणा से वे उसके इर्द-गिर्द जितना निकट हो सका इकट्ठा हो गए। इनमें से कुछ लोग उसके चेले बन रहे थे और उसमें उनकी दिलचस्पी केवल चंगाई देने की उसकी शक्तियों से आकर्षित होने से बढ़कर थी।

जब लोगों ने अपने पास यीशु को रुकने दिया, जब सचमुच में उन्होंने उसकी शिक्षाओं को सुना और उन पर विचार किया, और जब उन्हें कम से कम आंशिक रूप में यह समझ में आया कि वह वास्तव में कौन है, तो कम से कम उनमें से कुछ लोगों ने उसे मान लिया और उसके चेले

बन गए। खास तौर पर गलील में यही हुआ। दूसरे शब्दों में, उसने जवानों और बूढ़ों, पढ़े लिखों और अनपढ़ों, धनवानों और निर्धनों, धर्मियों और पापियों और यहां तक कि कुछ राजनैतिक लोगों को भी अपनी और खींचा था। उसने ऐसे गुणों को दिखाया जिनसे लोगों को विश्वास आया, और वे प्रेम से भर गए और उन्हें स्वास्थ्य, शांति, समर्पण और सही सोच के लिए दिशा मिली। यीशु की उपस्थिति ने लोगों पर परमेश्वर की उपस्थिति को प्रकट किया। शुद्ध मन लोगों ने उससे प्रेम किया और उसके पीछे चलना चाहा।

5:21-24 में हम वचन के बड़े भाग का एक संक्षिप्त भाग देखते हैं कि अच्छे लोग मायूस होने पर यीशु को ढूंढ़ते थे। उन लोगों की जो अपने बल और समझ के खात्मे के निकट थे, सहायता केवल वही कर सकता था। यही कारण है कि जब यीशु भीड़ को उपदेश दे रहा था तो याईर नाम का आराधनालय का एक अधिकारी, उसके पास आकर उससे विनती करने लगा कि उसकी बारह वर्ष की बेटी को भयानक बीमारी से बचा ले। यह अधिकारी यीशु के पास आकर उसके सामने गिर पड़ा, याचना भरी आवाज से उसे बताने लगा कि उसकी बेटी ''मरने पर है।'' वह चाहता था कि यीशु उसके घर जाकर ''उस पर हाथ रख'' दे ताकि वह ''चंगी होकर जीवित रहे'' (5:22, 23)। अपने स्वभाव के अनुकूल यीशु ने उसकी विनती पर तरस दिखाया। वह तुरन्त उपदेश देने से रुक गया और याईर के साथ उसके घर की ओर चल पड़ा।

इस हाकिम को भरोसा था कि उसकी बेटी की हालत यीशु को पता चल जाए तो बेटी की सहायता हो सकती है। यीशु के पास जाकर उसने अपनी आवश्यकता को ज़ोरदार ढंग से, आदरपूर्वक और सुन्दरता से प्रस्तुत किया। जैसे नये नियम के किसी और व्यक्ति ने किया हो। उससे हमें यह पता चलता है कि यीशु के सामने सही ढंग से और सच्चे मन से विनती कैसे की जाए। जब हम जानना चाहते हैं कि यीशु के सामने विनती कैसे की जाए, तो याईर हमें अनुकरण करने के लिए अच्छा नमूना देता है। आइए देखते हैं कि उसने क्या कहा और कैसे कहा।

1. यह धार्मिक आदमी यीशु के पास *भक्तिपूर्वक* गया। मरकुस ने कहा कि यीशु को ''देखकर [वह] उसके पाँवों पर गिरा'' (5:22)। निश्चय ही यह किसी बड़े अधिकारी के सामने विनती करने की पूर्व की परम्परा से बढ़कर था। उसे यीशु में इतना अधिक विश्वास था कि यीशु की उपस्थिति में भीतर आने पर वह घुटनों के बल झुक गया। यह यीशु को भक्तिपूर्वक मानना था।

परमेश्वर और भक्ति साथ-साथ चलते हैं। मनुष्य की भक्ति नहीं होनी चाहिए, परन्तु परमेश्वर की होनी चाहिए। याईर को पता था कि यीशु में किसी से भी बढ़कर, जिसे वह पहले कभी जानता था, अधिक शक्तियां थीं। वह यह मान गया होगा कि यीशु के स्वभाव से केवल ''परमेश्वर'' को बताया जा सकता है। जो कुछ वह यीशु को मानता था उसके कारण उसके मन ने उसे उसके योग्य आदर देने को विवश कर दिया।

जब हम परमेश्वर के पुत्र के सामने अपनी विनतियां लेकर आते हैं तो हमें अपनी बातों के साथ-साथ अपने कामों में अपनी समझ को दिखाना आवश्यक होता है वह कौन है। उसके सामने हमें परमेश्वर का भय मानने वाले, विश्वासी, भक्ति भरे लोगों के रूप में झुकना आवश्यक है।

2. इसके अलावा, यह पिता यीशु के पास *सच्चे दिल से* गया। वचन कहता है कि उसने ''उससे बहुत विनती की'' (5:23)। उसकी बेटी बेहद बीमार थी। वह बारह वर्ष की थी और

मरने वाली थी। याईर ने अपनी विनतियों में अपना पूरा मन डाल दिया। उसकी मायूसी को यीशु उसकी हर बात में देख सकता था। यीशु को छोड़ वह किसी और को नहीं जानता था जो किसी मर रहे व्यक्ति को मृत्यु से छुड़ा सके। परमेश्वर से जो हमारे जीवन और मृत्यु के बीच खड़ा है, सच्चे दिल से प्रार्थना करने वाले के लिए यह सही है। योना की तरह, याईर यह दिखाता है कि हमें प्रार्थना सच्चे दिल से करनी चाहिए।

3. याईर यीशु के पास *दृढ़संकल्प* होकर गया। उसके दिमाग में एक योजना थी। वह यीशु से एक बात चाहता था, ''तू आकर उस पर हाथ रख कि वह चंगी होकर जीवित रहे'' (5:23)। उसे यीशु में इतना विश्वास था कि उसका मानना था कि यीशु के हाथों में इतनी शक्ति है कि वह उसकी बेटी को खतरनाक बीमारी से उठा सकते हैं।

कोई भी जो अपनी आत्मिक आवश्यकताओं पर गम्भीरता से विचार करता है, उसे अच्छी तरह से पता है कि उसे परमेश्वर से क्या मांगना चाहिए। उसके मन में मसीह का उद्धार करने वाला अनुग्रह होना आवश्यक है, नहीं तो वह आत्मिक मौत मर जाएगा। उद्धार मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता है। क्रूस पर मरने वाले डाकू को भी, चाहे उसने आत्मिक बातों पर अधिक विचार नहीं किया था, उस उ्द्धार की आवश्यकता का पता था, जो यीशु दे सकता है। दम तोड़ते हुए उसने दृढ़ संकल्प से यीशु से अपने राज्य में आने पर उसे स्मरण रखने को कहा।

4. वचन के इस भाग वाला आराधनालय का अधिकारी यीशु के पास *अविलंब* गया। वह जानता था कि उसकी बेटी का समय निकलता जा रहा है। याईर ने कहा कि वह ''मरने पर'' थी (5:23)। लूका 8:42 संकेत देता है कि उसकी बेटी ''मरने पर'' थी; परन्तु मत्ती 9:18 के अनुसार, उस आदमी ने कहा, ''मेरी पुत्री अभी मरी है।'' याईर को पता था कि कम से कम वह मरने की प्रक्रिया में है यानी किसी भी पल उसकी जान जा सकती है। अपनी छोटी बच्ची के साथ इस पिता के विशेष सम्बन्ध ने उसकी याचना की गर्मजोशी को बढ़ा दिया।

हम में से हर कोई कभी न कभी इस संसार और अनन्तकाल में जीवन के बीच खड़ा हुआ है। शरीर का पतला सा पर्दा नाशवान को अविनाशी से अलग करता है। सांसारिक समस्याओं को आम तौर पर सुधार किया जा सकता है, परन्तु अनन्तकाल में खोए हुए प्राण की छुटकारी की योजना पर कोई पहुंच नहीं है। बड़ी गम्भीरता और तत्परता के साथ हमें तुरन्त यीशु की ओर लौट जाना चाहिए।

5. याईर यीशु के पास बड़ी *उम्मीद* के साथ भी गया। उसका विश्वास था कि यीशु उसकी बेटी को चंगा कर सकता है। उसने यीशु को आश्चर्यकर्म करते हुए देखा होगा और उसे विश्वास होगा कि इस लड़की को चंगा करने के लिए जो कुछ भी करना आवश्यक हो, वह कर सकता है। इस दु:खद और मायूसी भरे दृश्य में सच्चे मन से विश्वास की महिमा और सुन्दरता को दिखाया गया है।

याकूब ने समझाया, ''पर विश्वास से मांगे, और कुछ सन्देह न करे; क्योंकि सन्देह करने वाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है'' (याकूब 1:6)। क्या हमारा विश्वास यीशु में है? क्या हमारा विश्वास पक्का है? क्या हमारे मन यह कहते हैं, ''यीशु के साथ हम हार नहीं सकते; बिना उसके हम सफल नहीं हो सकते''? जब भी कोई यीशु के पास विनती लेकर जाता है, तो वह यह देखने के लिए कि यह विनती उसके मन के विश्वास से

निकली है या नहीं, उससे आगे देखता है।

निष्कर्ष: कुछ लोग नष्ट हो जाएंगे क्योंकि उन्होंने उन्हें बचाने के लिए यीशु को कभी पुकारा ही नहीं। बहुत सम्भावना है कि कुछ लोग इसलिए खो जाएंगे क्योंकि उन्होंने अनमने ढंग से उन्हें बचाने के लिए उसे पुकारा है। जिन लोगों का उद्धार होगा ये वही हैं जिन्होंने सच्चे मन से संजीदगी के साथ और आज्ञा मानते हुए उद्धार की उसकी पेशकश को स्वीकार किया है। शारीरिक मृत्यु से उद्धार आवश्यक है परन्तु अनन्त मृत्यु से उद्धार और भी आवश्यक है।

उद्धार की पौलुस की कहानी में याईर की विनती की सभी बातें हैं। यह पता चलने पर कि यीशु के बारे में उसके विचार गलत थे, कांपते हुए मन के साथ उसने कहा, ''हे प्रभु, मैं क्या करूं?'' उसे दमिश्क में जाने कहा गया, जहां उसे बताया जाना था कि उसे क्या करना है। तीन दिन तक प्रार्थना करने और उपवास रखने के बाद (प्रेरितों 22:10), हनन्याह ने उसे बताया कि उसे और क्या करना आवश्यक है: ''अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16)। बपतिस्मे के इस कार्य में वह प्रभु का नाम पुकार रहा था; और वह पुकार उसने भक्तिपूर्वक, सच्चे मन से, सोच समझकर, अविलंब, उम्मीद रखकर की।

हम निश्चय के साथ यह मान सकते हैं कि प्रभु किसी खोजी, गम्भीर और दृढ़-संकल्प व्यक्ति को जाने नहीं देगा। यदि आप सचमुच में महिमा के द्वार तक, उसके साथ चलना चाहते हैं, तो परमेश्वर के अद्भुत ईश्वरीय प्रबन्ध के द्वारा, यीशु इस बात का ध्यान रखेगा कि आपको वही करने का अवसर दिया जाए।

परमेश्वर की सेवा करना (5:21-34)

कफ़रनहूम के आराधनालय का सरदार, मायूस याईर यीशु के पास अपनी बच्ची की चंगाई के लिए आया था। उसकी बेटी मर रही थी और उसे यह मालूम था। वह यीशु के पास आया और उससे उसके साथ आकर उसकी बेटी को मृत्यु के चंगुल से छुड़ाने की सच्चे मन से विनती करते हुए, उसके सामने गिर गया। उसकी भावनात्मक विनती सुनकर यीशु ने प्रेम और अनुग्रह जो वह हमेशा दिखाता था, से मुड़ा और उसके घर की ओर ''उसके साथ चला'' गया (5:24)।

याईर को पता था कि ये यीशु तुरन्त उसके पास नहीं जाता तो उसकी बेटी किसी भी पल मर जाएगी। जब यीशु उसके साथ जाने को तैयार हो गया तो उसके मन में उम्मीद जाग गई। वह जितनी जल्दी हो सके यीशु को अपनी बेटी के पास ले जाना चाह रहा था। उसका मानना था कि उसकी जान अटकी हुई है।

उनके याईर के घर की ओर जाते हुए रास्ते में भीड़ में से एक अशुद्ध स्त्री ने निकलकर यीशु के वस्त्र को छू लिया। उसके यीशु के वस्त्र को छूने पर उसे रुककर, चंगा होने की उस स्त्री की इच्छा पूरी करनी पड़ी। इस स्त्री ने याईर की जान बचाने की योजनाओं में दखल दिया, चाहे वचन यह नहीं बताता कि उसने इसके बारे में कुछ कहा या नहीं। साफ़ है कि उसने इस घटना को किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह यदि वह उसकी जगह होता, यीशु के हाथों में दे दिया।

जिसे हम रुकावट मानते हैं, हो सकता है कि वह ऐसी जगहों में जिनका हमें ध्यान नहीं था परमेश्वर के खत्म न होने वाले अनुग्रह को फैलने के लिए ईश्वरीय अवसर हों। हम केवल

अनुमान लगा सकते हैं कि याईर ने चंगाई की योजना में इस दखल का वही किया जो अपनी बेटी के लिए उसके मन में था। इसके विषय में जो वचन बताता है उसके अनुसार याईर ने उस रुकावट को यीशु के नियन्त्रण में देखा, परन्तु ऐसी परिस्थिति में जिसका सामना याईर को करना पड़ा, हम होते तो क्या करते?

यह घटना हमें परमेश्वर की सेवा करके विषय पर ले आती है। हम परमेश्वर की सेवा को कैसे देखेंगे?

1. परमेश्वर की सेवा का सम्बन्ध *परमेश्वर में विश्वास* के साथ है। क्या परमेश्वर हर परिस्थिति में हमारे साथ वफ़ादार होगा? वास्तव में, वह वफ़ादार होगा। क्या किसी रुकावट पड़ जाने पर वह हमारे साथ अपना वचन निभाने में अपने मन को बदल लेगा? उसके लिए ऐसा करना असम्भव है। यदि कलांतर में हमें सामान्य परिस्थितियों में यहोवा में भरोसा किया था तो क्या हम वर्तमान में असामान्य परिस्थितियों में उस पर भरोसा नहीं कर सकते? बेशक कर सकते हैं। क्या कोई रुकावट, छोटी हो या बड़ी, परमेश्वर के स्वभाव को बदल सकती है? नहीं, सनातन परमेश्वर बदलता नहीं है।

याईर जब अपने घर से निकला था तो उस समय उसकी बेटी मरने वाली थी। जब इस स्त्री ने यीशु को रोका, तो यीशु से उसकी विनती ने इस हाकिम की अपनी बेटी को बचाने की योजनाओं पर थोड़ा सा विराम लगा दिया। वह अपने मन में कह सकता होगा, ''यीशु के लिए रुककर किसी दूसरी की समस्या निपटाने का समय नहीं है। हमें जल्दी जाना पड़ेगा नहीं तो वह मर जाएगी। आखिर यीशु के पास पहले मैं गया था।''

जब यह खबर मिली कि लड़की मर चुकी है तो वह हाकिम मायूस हो गया होगा। उसे लगा होगा कि यीशु उसके मरने से पहले पहले पहुंच जाए, यीशु उसकी नन्हीं बेटी को बीमारी से बचा लेगा। कालांतर में उसने यीशु को लोगों को बीमारी से ठीक करते हुए देखा होगा, परन्तु उसे यीशु के किसी को मुर्दों में से जिलाने की बात का पता नहीं होगा। हाकिम की चिंता को ध्यान में रखते हुए, यीशु ने उससे कहा, ''मत डर केवल विश्वास रख'' (5:36)।

भीड़ में से कइयों ने यह सुझाव भी दिया होगा कि यीशु को चाहिए कि और आगे न जाए, उसे वापस चले जाना चाहिए। ''बच्ची की मृत्यु से, सब खत्म हो गया। अब कुछ नहीं हो सकता'' उन्होंने सोचा। जब सबसे बड़ी समस्या आई तो उन्होंने याईर को सुझाव दिया कि अब वह यीशु को परेशान न करे (5:35)। वे सुझाव दे रहे थे कि याईर मसीह को छोड़ दे जबकि उसको उसकी सबसे अधिक आवश्यकता थी! यीशु ने उनकी बेकार की नसीहत को नज़रअंदाज़ कर दिया। सच तो यह है कि यदि यीशु बीमार को चंगा कर सकता था तो वह मुर्दे को भी जिला सकता था। यह बात तब भी सच थी और आज के कथित आश्चर्यकर्म करने वालों के लिए आज भी सच है। शायद याईर के सलाहकारों ने इस तथ्य पर ध्यान नहीं दिया था!

2. परमेश्वर की सेवा करने का सम्बन्ध *परमेश्वर के समय* से है। समय हमारे लिए बहुत महत्व रखता है, विशेषकर तब जब किसी प्रियजन की जान पर बनी हो। परन्तु याद रखें कि परमेश्वर समय के बारे में अधिक नहीं सोचता। उसे इसकी आवश्यकता नहीं, क्योंकि सारा समय उसी के अधीन है। वह संसार के समय और अनन्तकाल का अधिकारी है। उसके सामने एक दिन हज़ार वर्ष के बराबर है और हज़ार वर्ष उसके लिए एक दिन के जैसा है (2 पतरस 3:8)।

वह समय को उसकी इच्छा के साथ मिलने के लिए विवश कर देता है; वह समय को उसे चलाने नहीं देता।

हमें उसके साथ, उसके लिए और उसके द्वारा रुकना सीखना आवश्यक है। हम उस पर भरोसा रखते हुए कि जो उसे सबसे बढ़िया लगेगा वही हमें देगा समय को उसके हाथों में देते हैं। उसकी समय-सारिणी, हो सकता है कि हमारी न हो, परन्तु उसकी समय-सारिणी हमारी होनी चाहिए। इस विवरण के अनुसार उसकी समय-सारिणी को हमारी समय-सारिणी होना सबसे बढ़िया बात है। यीशु उसकी समय-सारिणी को मानकर याईर के पास पाने के लिए सब कुछ था और खोने के लिए कुछ नहीं, क्योंकि उसकी सहायता केवल यीशु ही कर सकता था। हमें भी पता चलेगा कि हमारे साथ भी ऐसा ही है।

3. परमेश्वर की सेवा करने का सम्बन्ध *परमेश्वर की बड़ी भलाई* के साथ है। पृथ्वी की अपनी सेवकाई के दौरान, कइयों के लिए मसीह की देरी को समझ पाना कठिन रहा होगा। मारथा और मरियम को लगा होगा कि यीशु को लाज़र के सिरहाने तुरन्त आ जाना चाहिए था और उसे बीमारी से उठा देना चाहिए था। अंत में जब वह पहुंच गया, तो मारथा उससे मिलने के लिए गई और कहने लगी, ''हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता'' (यूहन्ना 11:21)। शायद वह सही कह रही थी। यदि यीशु वहां होता तो वह उसके भाई को चंगा कर सकता था; परन्तु मारथा की समझ के विपरीत, लाज़र के लिए यीशु की कोई बेहतर योजना थी। इस वर्तमान मामले में, याईर ने अपने मन में कहा होगा, ''हे प्रभु, जल्दी कर। तुझे पता नहीं चल रहा कि मेरी बेटी मर रही है!'' यदि उसने ऐसा कुछ सोचा तो बाद में उसे पता चल गया था कि सब कुछ यीशु के हाथ में था। वास्तव में उसने इस देरी का इस्तेमाल संसार को उससे जो याईर के मन में थी, बड़ी भलाई की आशीष देकर किया।

हां, आश्चर्यकर्म होने से पहले उसके मन में कुछ सवाल रहे होंगे, परन्तु आश्चर्यकर्म हो जाने के बाद वह उस बड़ी भलाई को देख सकता था जो यीशु संसार में लेकर आया था। बाद में मारथा और मरियम ने कहा होगा, ''अब मैं देख सकती हूं कि यीशु की नज़र एक बड़ी भलाई पर थी। वह हमें किसी के पुनरुत्थान का बड़ा प्रमाण देना चाहता था जो चार दिनों से मरा हुआ था।'' याईर जिसे उन आश्चर्यकर्मों से विश्वास हुआ था जो उसने देखे थे, बाद में कह सकता होगा, ''मेरा विश्वास उस मसीह को देखता है जो जीवन और मृत्यु से बड़ा है। इसके अलावा, मैं जानता हूं कि यीशु को हर किसी की चिंता है, चाहे वह स्त्री हो जिसने मेरे जीवन और परिवार की सबसे बड़ी मुसीबत की घड़ी में उसे रोका था।''

परमेश्वर, यीशु और पवित्र आत्मा हर समय व्यस्त रहते हैं। वे उस सनातन मंशा को जो बीते अनादिकाल से आने वाले अनादिकाल तक जाती है जगह में रख रहे हैं (और कतार बनाए हुए हैं)। वे युगों की और अनन्तकाल की उस बड़ी योजना की बड़ी भलाई के लिए काम कर रहे हैं। वे केवल यहूदियों के लिए नहीं बल्कि हर मसीही के लिए भलाई के लिए काम कर रहे हैं। परमेश्वर हमें निजी सेवकों और उन सेवकों के रूप में देखता है जो सेवकों के उस बड़े समूह का भाग हैं जो पूरी पृथ्वी पर फैले हुए हैं।

4. परमेश्वर की सेवा का सम्बन्ध *परमेश्वर की एकता* के साथ है। अपने पुत्र के द्वारा हमारा स्वर्गीय पिता सब चीज़ों को नियन्त्रित करता है और उन्हें इकट्ठा रखता है। यह केवल

भौतिक संसार के लिए ही नहीं बल्कि उस आत्मिक काम के लिए सच है जिसे वह संसार में कर रहा है।

बेशक रुकावटें आएंगी; और हर रुकावट का महत्व है, चाहे हम उन्हें अपनी ओर से देखें या प्रभु की ओर से। वे स्वतन्त्र नैतिक पसन्द के कारण वे आती हैं। परन्तु जब वे आती हैं तो हमें उस उद्देश्य की उस शानदार एकता में जो परमेश्वर में हमें मिली है, छोड़ नहीं देना चाहिए। यह सच है कि हो सकता है कि कुछ बातें जिन्हें हमें करने का सोचा है, न कर पाएं। जो काम अभी हम कर रहे हैं, हो सकता है कि उसमें से कुछ काम को हमें ''अधूरा'' लिखना पड़े। हो सकता है कि हम उतनी अच्छी तरह से न कर पाएं जितनी अच्छी तरह से हम करना चाहते हैं, परन्तु इसे जोड़ने वाली एकता को परमेश्वर अपने हाथों में और अपनी इच्छा में रखता है।

जब कोई बहादुर सिपाही हमें छोड़कर जाता है तो हमें लगता है कि उसके बिना हम कर नहीं पाएंगे। जैसे संसार में हम रहते हैं उसमें यह आवश्यक है। इसका अर्थ यह हुआ कि रुकावट वाले जीवन, विश्वासी सेवक को अधूरा काम को दूसरे लोगों द्वारा करना आवश्यक है जो परमेश्वर के डिज़ाइन और उसकी सनातन योजनाओं की मंशा से पूरी तरह से मेल खाते हुए परमेश्वर के हाथों में समर्पित होकर, अपनी सेवा पूरी करने के लिए विश्वास और उद्देश्य की उसी एकता के साथ काम करेंगे। जब आप इस पर विचार करते हैं तो वह तथ्य और बड़ा हो जाता है, उससे जो हम उन लोगों के काम के द्वारा जो परमेश्वर के सनातन डिज़ाइन से अलग है, के द्वारा किए जा सकने वाले से कहीं बढ़कर महत्वपूर्ण बात करते हैं। परमेश्वर की सेवा करने का यह पहलू निर्णायक ढंग से हमारे काम के साथ जुड़ा है। जब काम विशेष लोगों और केवल उन्हीं के गिर्द घूमता हो तो केन्द्र में मनुष्य होता है; जब काम परमेश्वर की एकता और योजना के इर्द-गिर्द घूमता हो तो केन्द्र में परमेश्वर होता है, जिसमें वह इस संसार को बचाने के अपने कार्य को करता है।

5. परमेश्वर की सेवा करने की प्रतीक्षा हमें *परमेश्वर के अनुशासन* तक ले आता है। उसकी देरी का अर्थ इनकार करना नहीं होता; परन्तु सही ढंग से काम करने पर, उनसे हमें ऐसा अनुशासन मिलता है जो हमारी आत्मिक सोच के लिए आवश्यक होता है। जब जीवन में सब कुछ ठीक ठाक हो, कहीं कुछ गड़बड़ न हो, तो मसीही व्यक्ति निधड़क हो जाता है और मन ही मन खुश होता है। जब जीवन में चारों ओर परेशानियां हों, हर समय कुछ न कुछ गड़बड़ ही हो रही हो, तो मसीही व्यक्ति कठोर निर्दयी होकर जीवन से और अपने आप से बहुत निराश हो सकता है। जब कुछ कुछ ठीक हो और कुछ कुछ मुश्किलें हों, तो मसीही व्यक्ति अपने विश्वास के लिए एक अनुशासन बना सकता है। परमेश्वर की सेवा करने वाला विश्वास, परमेश्वर में चलता है और परमेश्वर की सामर्थ में प्रतिदिन बना रहता है, वह उस अनुशासन को दिखाता है जो परमेश्वर की संतान को अपने अंदर लाना आवश्यक है।

अनुशासित विश्वास की यह बात हमारी आशा तक भी जाती है। जब कोई सपना साकार होने वाला हो और जब कोई त्रासदी हमारे ऊपर आन पड़े तो हमारी आशा हमें दृढ़ बने रहने में सहायता करती है। जब बड़े ध्यान से बनाई गई हमारी योजनाओं में कोई व्यक्ति या वस्तु दखल देकर, रुकावट डाल दे तो हमारी आशा हमें आगे बढ़ाती रहती है, हमारा भरोसा परमेश्वर में बनाए रखती है, हमारा भरोसा परमेश्वर के साथ जोड़े रखती है।

ऐसी घड़ियां जिनमें टूटे सपने हों, हमारे सामने परीक्षा की समय ले आती हैं, ऐसा समय जो न केवल हमारे विश्वास की, बल्कि यीशु में हमारी आशा की भी परख करता है। परन्तु हमारा विश्वास और आशा उन पर लागू किया जाए तो अनुशासन आ जाता है और विश्वास और आशा की हमारी आत्मिक मांसपेशियां मज़बूत हो जाती हैं। ऐसे समयों से ऐसा विश्वास और आशा बनने में सहायता मिलती है जो परमेश्वर चाहता है कि हमारे अंदर हो।

निष्कर्ष: यीशु याईर के साथ उसके घर गया और उसने उसकी बेटी को मुर्दों में से जिला दिया। याईर को इस जीवन में यह पता नहीं था कि एक दिन मरकुस पवित्र शास्त्र में ईश्वरीय इतिहास के इस भाग यानी याईर और यीशु के इतिहास को सारे संसार के लिए पढ़ने के लिए लिख देगा।

परमेश्वर के पुत्र यीशु की सेवा करना यीशु में हमारे विश्वास को बढ़ाता है - यीशु की समय-सारिणी में विश्वास, उस बड़ी भलाई में विश्वास जो परमेश्वर चाहता है, उस सारी एकता में विश्वास जो परमेश्वर अपनी ईश्वरीय मंशा के लिए चलाता है और चेले के विश्वास में प्रतिदिन अनुशासन को बनाने के महत्व में विश्वास।

यीशु ने याईर को जैसा वह था वैसा ही लिया, परन्तु वह उससे इतना प्रेम करता था कि वह उसे वैसा ही छोड़ना नहीं चाहता था। अपनी देखरेख में उसने उसे अपनी एक बड़ा चेला होने के लिए बढ़ने दिया। यह दु:खी संसार है, परन्तु यह वह सुन्दर जगह है जिसमें यीशु के स्वरूप में बढ़ा जा सकता है। यह बढ़ना कई बार केवल परमेश्वर की सेवा करने से हो सकता है, वह सेवा करना हमें उस बड़े जीवन और प्रेम में चलने देता है जो परमेश्वर ने हमारे लिए रखा है।

तथ्यपूर्ण विश्वास को वास्तविक विश्वास बनाना (5:25-34)

5:22-43 में दो आश्चर्यकर्म बताए गए हैं, उनमें एक आश्चर्यकर्म की घटना दूसरे के बीच में आती है। पहला आश्चर्यकर्म जो लहू बहने वाली एक स्त्री की चंगाई का था, दूसरी घटना में रुकावट बना। यीशु ने इन दोनों घटनाओं के साथ हमारी उम्मीद के मुताबिक अनुग्रह, दयालुता और ईश्वरीय सामर्थ के साथ काम किया। परमेश्वर के पुत्र ने हर बार रुकावट को दूसरों की सेवा करने और अपनी ईश्वरीय सामर्थ को दिखाने के लिए महिमा से भरे अवसर में बदल दिया।

पहले आश्चर्यकर्म से सम्बन्धित स्त्री बहुत निर्धन, बहुत ही परेशान और गम्भीर रूप में बीमार थी। वह बारह वर्षों से खतरनाक बीमारी से लड़ रही थी। उसकी बीमारी ने उसे अशुद्ध बना दिया था और उसे निकाली हुई माना जाता होगा। उसने अपना सारा पैसा वैद्यों पर खर्च कर दिया था, परन्तु उसकी सेहत में कोई सुधार नहीं हुआ था। वास्तव में यह और बिगड़ गई थी। वर्षों तक निराशा भरा जीवन बिताने के बाद उसने अपने अंतिम आश्रय के रूप में यीशु की ओर देखा।

यीशु के प्रचार करने और चंगाई देने की खबर पूरे नगर में फैल गई थी। इस स्त्री ने सुना और इन बातों को मान लिया। शायद यीशु को कोई आश्चर्यकर्म करते देखे बिना उसने उसकी गवाही को मान लिया था। मायूस होकर उसने ठान लिया था कि जो चंगाई उसे चाहिए, उसके लिए वह यीशु के पास जाएगी। यीशु के पीछे उसका जाना 5:25-34 वाले विवरण का एक कथानक है।

एक स्त्री के यीशु के पास जाने की घटना जोश से भरी हुई है; यह विश्वास के स्वभाव

और अर्थ से सम्बन्धित जानकारी से ली गई है। जो कुछ इस स्त्री ने किया वह ''विश्वास कैसे आरम्भ होता है?''; ''आरम्भिक विश्वास मज़बूत विश्वास में कैसे बढ़ता है?'' और ''विश्वास उद्धार दिलाने वाला विश्वास कब बनता है?'' जैसे प्रश्नों के उत्तर देता है। तथ्यात्मक विश्वास के वास्तविक विश्वास बनने के ढंग को देखते हुए आइए ध्यान से यीशु के इस आश्चर्यकर्म के परिणाम को देखें।

1. पहले चरण में हम इस स्त्री के विश्वास के सफ़र में उस गवाही को जो उसे मिली थी, *मानने* को देखते हैं। उसके जवाब से यह पता चल गया कि उसका विश्वास कहां से आकार लेने लगा। रोमियों 10:17 में पौलुस ने विश्वास के आरम्भ होने की सच्चाई लिखी है: ''अत: विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।''

यहां पर उस स्त्री ने उन सच्ची खबरों को सुना था कि यीशु क्या कर रहा था। यीशु के कामों के बारे में सुनना ''मसीह के वचन'' को सुनने की तरह नहीं है। परन्तु जो गवाही उसके कानों में पड़ी थी उसे स्वीकार करने के लिए उसे अपने मन में यह कहने की चुनौती मिली होगी, ''यदि यह सच है, तो यह वही है जो आने वाला था।'' शायद यहां पर उसकी समझ डावांडोल है, परन्तु इतनी मज़बूत है कि उसे यीशु के सम्बन्ध में कार्यवाही करने के लिए प्रेरित कर सकती है। उसे इतना यकीन था कि उसने उसके पीछे जाने का निर्णय ले लिया।

यहोशू 2 में रहाब ने परमेश्वर की केवल दो कहानियां सुनी हुई थीं। उसने उस गवाही से, चाहे वह बहुत कम थी, मान लिया और इस्राएल के परमेश्वर के साथ होने का निर्णय ले लिया। यह स्वीकृति एक सही आरम्भ था। इससे वह आगे बढ़ी और अवसर के उस द्वार को खोल दिया जो उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। यही बात इस स्त्री और यीशु को जानने की उसकी इच्छा के बारे में है।

2. दूसरा चरण *इरादा* है। जो गवाही उसने सुनी थी उसकी अपनी स्वीकृति का उसने क्या करने का निर्णय लिया? जब उसे पता चला कि यीशु पास ही है, तो उसने भीड़ में से निकलकर उसे स्पर्श करने के लिए जाने का इरादा किया। याईर लोगों के सामने यीशु के पास गया था, परन्तु इस स्त्री ने उसे चुपके से छूने का निश्चय किया। वह कैसे कर सकती थी? उसने उसके पीछे से जाकर उसके वस्त्र को छू लेना था। यदि वह ऐसा करती तो गवाही की अपनी स्वकृति तक उसे डटे रहना पड़ना था। मरकुस यह बताते हुए कि उसने क्या किया, लिखता है, ''क्योंकि वह कहती थी, 'यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूँगी, तो चंगी हो जाऊँगी''' (5:28)।

यह जानना कि यीशु निकट है एक बात थी; भीड़ में से उसके इतना निकट जाकर उसका वस्त्र को छू ले निर्णय लेना दूसरी बात थी। स्वीकृति अगला चरण था परन्तु उसके अगला चरण यह निश्चय करना था कि उसका तथ्यात्मक विश्वास को वास्तविक विश्वास में दिखाया जाए।

इस्राएलियों के जंगल में घूमने के दौरान ज़हरीले सांप इस्राएलों के विरोध में आ गए, क्योंकि उनमें से कई परमेश्वर के विरोध में कुड़कुड़ाए थे। जब मूसा ने लोगों के लिए बीच बचाव किया, तो उसे एक खम्भा बनाकर उसके ऊपर सांप की पीतल की प्रतिमा उसके ऊपर लटकाने को कहा गया। यदि सांप का काटा कोई पीतल के सांप की ओर देख लेता तो उसने जीवित बच जाना था (गिनती 21:8, 9)। उपचार का केवल पता होना मर रहे इस्राएलियों को चंगाई नहीं मिलनी थी। सांप के काटे हर व्यक्ति को चंगाई के लिए दिए गए निर्देशों को मानकर,

जो करने को कहा गया था, उसे करके, उस गवाही को मानना आवश्यक था।

3. इस स्त्री के विश्वास की यात्रा में मिलने वाला तीसरा चरण *कार्यवाही* का चरण है। उसने निर्णय लिया था कि वह यीशु को छूने जा रही है, परन्तु उसका विश्वास जीवित विश्वास बनना आवश्यक था। उसे वहां जाना आवश्यक था जहां यीशु था। यदि वह वहीं खड़ी रहकर उसे भीड़ के साथ जाते हुए देखती रहती, तो उसने चंगी नहीं होना था। उसने काम किया। उसने अपने आगे के लोगों के ऊपर से होकर यीशु के पास जाकर उसे छुआ।

याकूब ने विश्वास के ''कामों'' पर ज़ोर दिया। उसने कहा कि ऐसा विश्वास जो काम नहीं करता, मरा हुआ विश्वास है: ''वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है'' (याकूब 2:17)। उसने कहा कि विश्वास तब तक वास्तविक विश्वास नहीं बनता जब तक इसमें अपने अंदर से ''काम'' नहीं हैं: ''इस प्रकार तुम ने देख लिया कि मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं, वरन कर्मों से भी धर्मी ठहरता है'' (याकूब 2:24)। तथ्यात्मक और वास्तविक विश्वास में यही अंतर है।

तथ्यात्मक विश्वास केवल सचमुच की गवाही को मानकर उसे निश्चय जानना है। दुष्टात्माओं का भी ऐसा विश्वास है, इसके कारण उन्हें कंपकंपी लग जाती है (याकूब 2:19)। वास्तविक विश्वास के कारण कोई कांप सकता है परन्तु यह उसके आगे बढ़कर कार्यवाही के लिए भी काम करता है, जैसा कि एक स्त्री के साथ हुआ जिसने यीशु के वस्त्र को छुआ। वास्तविक विश्वास वह कार्यवाही है जो गवाही को मानने और निश्चय जानने से होती है। इस स्त्री के विश्वास में यही हुआ और हमारे विश्वास में भी ऐसा ही होना आवश्यक है।

निष्कर्ष: मरकुस ने इस विवरण के साथ इस स्त्री के विश्वास की यात्रा के पूरा होने की घोषणा की: ''यीशु ने तुरन्त अपने में जान लिया कि मुझ में से सामर्थ्य निकली है, और भीड़ में पीछे फिरकर पूछा, 'मेरा वस्त्र किसने छुआ?''' (5:30)। यीशु ने एकदम पीछे मुड़कर इस स्पर्श का जवाब दिया। साफ़ तौर पर वह स्त्री के मन की पुष्टि करना चाहता था कि उसके साथ क्या हुआ था, लोगों के सामने उसके विश्वास को आदर देना चाहता था और उस चंगाई की घोषणा करना चाहता था जो हुई थी।

''उसके चेलों ने उससे कहा, 'तू देखता है कि भीड़ तुझ पर गिरी पड़ती है, और तू कहता है कि किसने मुझे छुआ?' तब उसने उसे देखने के लिये जिसने यह काम किया था, चारों ओर दृष्टि की।'' (5:31, 32)। कई सालों तक अशुद्ध और लोगों के बीच में जाने से रोके जाने के बाद इस स्त्री ने ''उसके पाँवों पर गिरकर उससे सब हाल सच-सच कह दिया'' (5:33)। उस स्त्री का विश्वास असली था। यीशु से मिलकर उसने वह सब पा लिया था जो उसका विश्वास था कि वह होगा। यीशु ने उसके विश्वास को ऐसा विश्वास माना जिसे वह लोगों में डालना चाह रहा था। ''उसने उससे कहा, 'पुत्री, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है: कुशल से जा, और अपनी इस बीमारी से बची रह''' (5:34)। अपना विश्वास यीशु में रखकर जब कोई इस पर काम करता है, तो यीशु उस व्यक्ति को अपनी आशिषों से भर देता है।

वास्तविक विश्वास हमें यीशु के पास ले आता है। असली होने के कारण यह हमें उन प्रतिफलों का आनन्द करने के योग्य बनाता है जिन्हें परमेश्वर के पुत्र को छोड़ कोई और नहीं दे सकता।

यीशु और मृत्यु (5:35-43)

उस स्त्री से जिसे लहू बहने से चंगाई मिली थी, अपनी अंतिम बात कहने के बाद यीशु के याईर के साथ उसके घर की ओर जाने के लिए मुड़ने पर, दूत यह संदेश लेकर आ गए थे कि याईर की बेटी मर चुकी है। आराधनायल के हाकिम के घर से आए इन लोगों का मानना था कि यीशु अब कुछ नहीं कर सकता। उन्होंने कहा, ''तेरी बेटी तो मर गई, अब गुरु को क्यों दुःख देता है?'' (5:35)। उन्हें यह समझ में नहीं आया कि यदि वह सचमुच में बीमारों को चंगा कर सकता है, तो वह मुर्दों को भी जिला सकता है। चाहे उन्होंने याईर को संदेश दे दिया था परन्तु यीशु ने उनकी बात और याईर को दिए गए परामर्श को अनसुना कर दिया।

प्रभु जो कि दिलों का जानने वाला है, जानता था कि उनके समाचार से याईर टूट जाएगा। उसने शांति देने वाली बातें कीं: ''मत डर; केवल विश्वास रख'' (5:36)। शायद याईर के मन में डर था कि यीशु समय पर उसकी बेटी के पास नहीं पहुंच पाएगा। दृढ़ विश्वास उसे यीशु तक ले आया था। इस परेशान कर देने वाली बात के साथ, उसे यह बताया जाना आवश्यक था, ''मत डर; केवल विश्वास रख।'' यीशु ने पहले याईर के मन की उदासी को दूर किया और फिर उसके घर की ओर चला।

यीशु लड़की के मुर्दों में से जिलाने को तमाशा नहीं बनाना चाहता था। उसकी सेवकाई में यहां पर कोई आश्चर्यकर्म के होने से उसके द्वारा की गई चंगाइयों से कहीं बढ़कर उत्तेजना हो सकती थी। वचन यह कहता है, ''और उसने पतरस और याकूब और याकूब के भाई यूहन्ना को छोड़, अन्य किसी को अपने साथ आने न दिया'' (5:37)। बाद में यीशु द्वारा बहुत से लोगों के सामने लाज़र को मुर्दों में से जिलाने पर उसकी सेवकाई खत्म हो गई। यहां पर, अभी बहुत काम करना था। उसे आश्चर्यकर्म करने की अपनी शक्ति के उल्लास को कम करना आवश्यक था ताकि वह अपनी सेवकाई को पूरा कर सके।

घर पहुंचने पर, याईर और यीशु को वहां शोरगुल मिला। विलाप करने वाले आ चुके थे, वे ज़ोर-ज़ोर से रो रहे और विलाप कर रहे थे। पहली सदी के संसार में किसी के यहां मौत हो जाने पर शव को आम तौर पर उसी दिन दफ़ना दिया जाता था, जिस दिन मौत हुई हो; विलाप दिन भर और रात भी चलता रहता था।

पतरस, याकूब, यूहन्ना के साथ याईर और उसकी पत्नी को साथ लेकर, यीशु वहां चला गया जहां बच्ची पड़ी हुई थी। उसके बिस्तर की ओर झुकते हुए उसने मृत लड़की का हाथ पकड़ा और अरामी भाषा में कहा, ''तलीता कूमी!'' (5:41)। ''तलीता'' ''बच्ची'' के लिए और ''कूमी'' क्रिया शब्द ''उठ'' के लिए शब्द है। मरकुस ने लिखा है, ''लड़की तुरन्त उठकर चलने फिरने लगी; क्योंकि वह बारह वर्ष की थी। इस पर लोग बहुत चकित हो गए'' (5:42)।

यह दृश्य मुर्दों में से वास्तविक जी उठने का था। कोई मनुष्य किसी मुर्दे में प्राण डालकर उसे जिला नहीं सकता। केवल परमेश्वर का पुत्र ऐसा कर सकता है। यीशु की सच्चाई का यह सबसे बड़ा प्रमाण था, दूसरे सब आश्चर्यकर्म केवल उसके सहायक प्रमाण थे। जीवन की रचना केवल परमेश्वर कर सकता है और केवल परमेश्वर ही इसे फिर से बना सकता है। यीशु की पहचान का कोई सबूत बाकी नहीं रह गया था; उसके परमेश्वर का पुत्र होने की सच्चाई मुर्दों में से उसके अपने जी उठने से साबित हो जाएगी।

सुसमाचार के विवरणों में यीशु को तीन लोगों को मुर्दों में से जिलाते हुए दिखाया गया है: यह लड़की जो अभी-अभी मरी थी; जवान आदमी जिसे दफ़नाने के लिए कब्र में ले जाया जा रहा था (लूका 7:11-17); और लाज़र, जो चार दिनों से कब्र में था (यूहन्ना 11:1-44)। साफ़ है कि यीशु ने बहुत लोगों को मुर्दों को नहीं जिलाया। उसने बहुत से रोगियों और बीमारों को चंगा किया। बीमारों को चंगा करना ही बहुत रुकावट डालने वाला था; लोगों के बीच में मुर्दों को जिलाना उसकी सेवकाई को बड़ी आसानी से कम कर सकता था। यही कारण होगा कि मरकुस 5 में इस अवसर पर यीशु ने कड़े आदेश दिए किए कि इस नन्हीं बच्ची को जिलाने की बात किसी को पता न चले।

यीशु के इस लड़की को मुर्दों में से जिलाने का यह संक्षिप्त दृश्य हमारे लिए आंखें खोल देने वाला है। बाइबल के बहुत कम वचन इस वचन के जितने असर डालने वाले हैं। एक आवश्यक प्रश्न जिसका इसमें उत्तर है, वह यह है ''यीशु मृत्यु का क्या करता है?'' आइए इस वचन में दिए गए उत्तरों को ध्यान से देखें।

1. यह अवसर इस सच्चाई को दिखाता है कि *यीशु मृत्यु के प्रभावों पर ध्यान देता है*। हमारे घरों में मृत्यु आने पर अकेलापन, मायूसी, डर, और व्यर्थता छा जाते हैं।

याईर को यह बताए जाने के बाद कि उसकी बेटी मर चुकी है, यीशु ने उसे बताया, ''मत डर; केवल विश्वास रख'' (5:36)। साफ़ है कि इस विचार पर ही याईर के हाथ पांव फूल गए कि यीशु उसकी बेटी को चंगा करने के लिए समय पर उसके कमरे में नहीं जा पाएगा। मृत्यु की इस घोषणा से वह परेशान हो गया, परन्तु यीशु ने उसे बताया कि डरने की कोई बात नहीं। डर इसी प्रकार से कई बार व्यक्ति पर हावी हो सकता है; परन्तु यीशु ने समझाया, ''डर को अपने ऊपर हावी मत होने दे, क्योंकि मैं तेरे साथ हूं।'' यीशु ने याईर को वह विश्वास भी याद दिलाया जो उसे यीशु की सहायता मांगने के लिए उसके पास ले आया था। उसने उसे समझाया, ''विश्वास करता रह।'' विश्वास को अपनी सोच को बदलने दे। यह तुझे मेरे पास ले आया और मैं तुझे भविष्य में ले जाऊंगा।

घर में पहुंचकर यीशु ने जब रोना धोना सुना, तो उसने कहा, ''लड़की मरी नहीं, परन्तु सो रही है'' (5:39)। यीशु ने इन शब्दों के साथ परिवार के आंसू पूंछकर उनके दु:ख को दूर करना चाहा। अपने विजयी जीवन के साथ यीशु मृत्यु को थोड़ी देर की नींद में बदल देता है। हमारे प्रभु के चेले अंतिम बार कभी ''अलविदा'' नहीं कहते। मसीही लोग एक-दूसरे से कह सकते हैं, ''मृत्यु तो हमारे मिलने में थोड़ी देर की दूरी डालती है।''

पुनरुत्थान की आशा और कब्र के आगे जीवन अकेलेपन, मायूसी, भय और उस व्यर्थता को दूर कर देता है जो मृत्यु के कारण आ सकती है। यीशु ने हम से वादा किया है कि वह मृत्यु की रात में हमारे साथ होगा। वह मृत्यु की घनी छांव को अनन्त जीवन के महिमा से भरे द्वार में बदल देता है। उसने हमें आश्वासन दिया है कि परमेश्वर की सनातन मंशा में हमारा भाग बरकरार है, क योंकि हमें परमेश्वर के सवोच्च उद्देश्यों में मिलाया गया है। हम इससे भी बड़े, अनन्त अवस्था में फिर से मिलेंगे। हमारे उसके साथ संगति में रहने, वह जीवन को इसकी सही भूमिका बना देगा।

यीशु ने याईर को समझाया कि उसमें विश्वास मृत्यु के प्रभावों का उत्तर है। हमारा उद्धारकर्त्ता केवल मृत्यु से ही निपटता, बल्कि इसके पहले और बाद के दर्दनाक भागों के साथ

हमारी सहायता भी करता है।

2. यह दृश्य साफ़ तौर पर हमें दिखाता है कि *यीशु मृत्यु की घटना पर ध्यान देता है*। मृत्यु का सामना हमें अकेले करने की आवश्यकता नहीं है। सांसारिक मित्र अंधकार में हमारे साथ थोड़ी दूर तक चल सकते हैं, परन्तु यीशु अंत तक हमारे साथ चलता है। प्रकाशितवाक्य को लिखते हुए यूहन्ना ने आरम्भिक मसीहियों को (और हमें) दिखाना चाहा कि मसीह उन परीक्षाओं में जो आने वाली थीं, उपस्थित होना था। सर्वशक्तिमान मसीह मृत्यु में से हमारे साथ चलकर, हमें इसके दूसरी ओर ले जाना चुनता है। परमेश्वर ने कभी नहीं चाहा कि हम मृत्यु में रुके रहें; वह हमें इसमें से निकाल लाता है ताकि हम उसके साथ हों। हमारा महान उद्धारकर्त्ता हर समय की अपनी संगति के साथ, हमें अनन्त जीवन के उस खुले द्वार तक ले जाएगा।

इस वचन में पुनरुत्थान पूर्ण था, जैसा कि पुनरुत्थान होना चाहिए। मृत्यु के कोई दर्जे नहीं हैं या तो व्यक्ति मरा हुआ होता है या जीवित। इस घटना में हम सकारात्मक प्रमाण को देखते हैं कि यीशु कौन है। यदि वह मुर्दे को जिला नहीं पाता, तो उसके पास सचमुच में आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ नहीं होनी थी; उसकी सामर्थ असीमित है, इसलिए वह मृत्यु को भी आज्ञा दे सकता है। यीशु के इस लड़की को मुर्दों में से जिलाने से, एक अर्थ में यीशु ने परमेश्वर के प्रकाशन को पूरा किया। इस प्रमाण के साथ लाजवाब ढंग से उसके परमेश्वर होने की सच्चाई बताई गई। वह प्रमाण यह भी कहता है कि अकेला यीशु ही है जो मृत्यु की घटना पर ध्यान दे सकता है।

3. इस दृश्य में चाहे साफ़ संकेत नहीं दिया गया, *यीशु मृत्यु के अस्तित्व से निपटता है*। प्रकाशितवाक्य 1:18 में दिखाई गई तस्वीर में यीशु को अपने हाथों में मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां पकड़े दिखाया गया है। वही है जो मृत्यु के अस्तित्व का कुछ कर सकता है। यह तथ्य कि उसने इस दृश्य में से मृत्यु को निकाल दिया हमारे ध्यान में उसके मृत्यु की वास्तविकता को मिटा देने की महिमा से भरी सम्भावना को लाता है। हमें बताया गया है कि एक दिन वह हम सब के लिए वही करेगा जो उसने इस बच्ची के लिए किया।

इस सच्चाई को सुसमाचार के विवरणों में दिखाया गया है। यीशु को वह बताया गया है जो हमें कब्र के आगे आशा देता है। यूहन्ना 5:28, 29 में, उसने हमारे लिए भविष्य के बड़े भाग को दिखाया। उसने कहा,

> इससे अचम्भा मत करो; क्योंकि वह समय आता है कि जितने कब्रों में हैं वे उसका शब्द सुनकर निकल आएँगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।

यीशु के याईर की बेटी को मुर्दों में से जिलाने की तस्वीर यह साबित करती है कि वह अंत समय में हम सब को मुर्दों से जिला सकता है (और जिलाएगा)। यह हमें दी गई उसकी बहुत बड़ी प्रतिज्ञा है।

वह अंतिम दिन अर्थात पुनरुत्थान का दिन आएगा। सब मुर्दों को जिला देने के बाद यीशु मृत्यु को खत्म करेगा। पौलुस ने लिखा कि समय के अंत में, ''जय मृत्यु को निगल'' ले गई। कितना बड़ा समाचार है! उसने यह भी कहा कि ''जब तक कि [यीशु] अपने बैरियों को अपने पांवों तले न ले लाए, तब तक उसका राज करना अवश्य है। सब से अन्तिम बैरी जो नाश किया

जाएगा वह मृत्यु है'' (1 कुरि. 15:24-26)। हां एक दिन आ रहा है जिसमें यीशु मृत्यु का अस्तित्व सदा के लिए मिटा देगा। वास्तव में मृत्यु एक दिन मरने वाली है।

निष्कर्ष: इस दृश्य को अपने ऊपर लागू करके हमें यह मानना आवश्यक है कि यीशु हमें मृत्यु से छुड़ा सकता है। यदि हम उसके साथ सहमत हो जाएं तो वह हमें अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा।

हमारे सबसे बड़े उद्धारकर्त्ता यीशु ने हमारी सबसे बड़ी आवश्यकताओं पर ध्यान दिया। उसने हमें पाप, व्यर्थता और मृत्यु से छुड़ाया। क्रूस के द्वारा वह हर पाप के लिए, हर व्यक्ति के लिए, हर उम्र के लिए मरकर सदा के लिए हमारा पाप उठाने वाला बन गया। बहुतायत के जीवन के अपने बड़े डिज़ाइन के साथ जीवन में हमें एक उद्देश्य दिया है जो जीने से दूसरे सब तरीकों से बढ़कर है। यीशु खुद मांस और लहू में भागीदार बना ताकि ''ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात शैतान को निकम्मा कर दे। और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे थे, उन्हें छुड़ा ले'' (इब्रा. 2:14, 15)।

एक प्रश्न जो रह जाता है वह यह है कि क्या हमारी मृत्यु काफ़िरों के रूप में होगी जो सदा के लिए मृत्यु के अंधकार में उतर जाते हैं, या हमारी मृत्यु यीशु की बाहों की शरण में अनन्त जीवन के लिए जी उठने के लिए होगी? सुसमाचार हमें निर्णय लेने को कहता है।

टिप्पणियां

[1]समानांतर विवरण मत्ती 8:28-34 और लूका 8:26-39 में हैं। [2]देखें मत्ती 4:24; 8:16; 10:8; मरकुस 1:32, 34; 6:13; 16:17, 18; लूका 4:40, 41; 9:1, 37-43; 11:14-22; 13:32; प्रेरितों 19:12. [3]इस इलाके लिए लिए कई प्राचीन नाम इस्तेमाल होते हैं। विलियम हैंड्रिक्सन ने लिखा, ''यदि यह मान लिया जाए कि ..., मुख्य रूप में झील के दक्षिण पूर्व की ओर कुछ मील की दूरी पर था परन्तु पूरे तट तक फैला हुआ बड़ा नगर गदारा था, जो कि उस पूरे इलाके की राजधानी था जो हेरसा से लगती थी, तो अलग-अलग भौगोलिक नामों के आरम्भ होने का कोई अर्थ निकलने लगता है। और तो और पूर्वी तट पर बसे हेरसा में तिरछे रूप में (झील पर), कफ़रनहूम के दक्षिण पर लगभग छह मील झील के किनारे की ओर एक तीखी पहाड़ी की ढलान है। वहां बहुत सी गुफ़ाएं भी, जो कि आज भी मिलती हैं, कब्रों के लिए उपयुक्त हैं'' (विलियम हैंड्रिक्सन, *एक्सपोज़िशन ऑफ़ द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मरकुस,* न्यू टैस्टामैंट कॉमैंट्री [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1975], 187-88)। [4]*द ज़ौंडरवन पिक्टोरियल बाइबल डिक्शनरी,* सम्पा. मैरिल सी. टेनी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1963), 293 में आर्थर एम. रॉस, ''गदारा, गदरेनिस।'' [5]यह शब्द लंदन में सेंट मेरी ऑफ़ बैतलहम नामक एक हस्पताल के नाम से लिया गया है। 1600 के अंतिम दशक में यहां कथित तौर पर पागलों को रखा जाता था। [6]10 मार्च 1841 में अलगज़ैंडर कैम्पबेल ने (demonology) ''भूत विद्या'' पर एक लैक्चर दिया, जिसमें उसने माना कि भूत मरे हुओं लोगों की आत्माएं होती हैं। उस भाषण का व्याख्यान, जो 10 मार्च 1841 को पापुलर लैक्चर कलब ऑफ़ टैनिसी में दिया गया था, *द मिलेनियम हार्बिंगर,* न्यू सीरीज़, अंक. 5 (अक्तूबर 1841): 457-80 में छपा था। [7]यहां पर दिया गया अशुद्ध आत्माओं का विचार एवरेट फर्ग्यूसन, *अरली क्रिश्चियंस स्पीक: फ़ेथ एंड लाइफ़ इन द फर्स्ट थ्री सैंचुरीज,* अंक. 2 (अबिलेन, टैक्सस: एसीयू प्रेस, 2002), 135-53 पर आधारित है। [8]*द ज़ौंडरवन पिक्टोरियल बाइबल डिक्शनरी,* सम्पा. मैरिल सी. टेनी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1963), 213 में मैरिल एफ़. अंगर, ''डीमन्स।'' [9]उसके व्यवहार को हम किसी दुर्घटना के समय व्यक्ति के शरीर में से अड्रेनलिन (अधिवृक्क रस) बहने से मिला सकते हैं जिससे एक साधारण व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के भारी बोझ को उठा सकता है। [10]कुछ लोग अनुमान लगाते हैं कि मरकुस रोमियों के लिए लिख रहा था और रोमी लोग दुष्टात्मा से ग्रस्त होने की बात को यहूदी अवधारणा मानते थे, इसलिए उसके पाठकों से उन दोनों की बात करने

की कोई आवश्यकता नहीं थी। यूनानी लोग भी भूतों में विश्वास रखते थे, जैसा कि प्लेटो *क्रेटिलस* आई. 398बी सुक्रात और हरमोजीन्स के बीच की चर्चा में पता चलता है।

[11]यदि ''गड्ढे'' अर्थात हेडिस में फेंक दिए जाते तो वहां उन्होंने अंतिम न्याय के समय तक रहना था, जब उन्हें आग की झील में सदा के लिए फैंके जाने का दण्ड मिलना था। [12]प्रकाशितवाक्य 7:4 में जिन्हें ''इस्राएल की संतानों के सब पर मोहर'' लगे बताया गया है वह परमेश्वर के सब बच्चों के लिए है। [13]यहूदियों का मानना था कि किसी दुष्टात्मा का नाम पता होने से व्यक्ति को उस पर अधिक शक्ति मिल जाती है। बाइबल में किसी का ''नाम'' उस व्यक्ति के पूरे स्वभाव को दिखा देता है। यह नाम यदि दिया गया था तो इसका अर्थ दुष्टात्मा के स्वभाव के साथ मिलता जुलता होना था। परन्तु यहां पर यहूदी दंतकथा को कि यीशु के लिए भूत को निकालने के लिए उसके नाम का पता होना आवश्यक था, कोई मायने नहीं रखता। यह कहने कि यह आवश्यक था, यीशु की सामर्थ को पाखण्डी यहूदी ओझाओं के स्तर पर ले आना होगा (देखें प्रेरितों 19:13–17)। कइयों का विचार है कि यीशु अपने चेलों को बताना चाहता था कि वे कई दुष्टात्माओं से पेश आ रहे हैं न कि केवल एक दुष्टात्मा से। यीशु शायद हर किसी को उस आदमी की गम्भीर स्थिति और दण्ड को दिखाना चाहता था। [14]हैंड्रिक्सन, 19, एन. 5सी.; देखें मरकुस 5:13; 6:7, 40; 14:30. [15]जॉनसन ओटमन, ''व्हेन अपॉन लाइफ़'स बिल्लोस,'' *सॉंग्स ऑफ़ फ़ेथ ऐंड प्रेस,* संक. व सम्पा. आल्टन एच. हॉवर्ड (वैस्ट मोनरो, लुईसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)। [16]''इस आदमी को खुद और उसके संदेश को सुनने वाले सब लोगों को यह पता होना आवश्यक है कि यहोवा उनके देश में आ चुका है और उसने अपने सेवक यीशु के द्वारा यह बड़ा काम किया है,'' चाहे परमेश्वर का नाम ''मूर्तिपूजकों को बताया जाना था। ... इस प्रकार यीशु ने पीछे एक मेहनती प्रचार को छोड़ दिया'' (आर. सी. एच. लेंस्की, *द इंटरप्रिटेशन ऑफ़ सेंट मरकुस'स गॉस्पल* [मिनियापोलिस: ऑग्सबर्ग पब्लिशिंग हाउस, 1946], 216–17)। [17]दस नगरों के नाम देने वाला पहला इतिहासकार *नेचुरल हिस्टरी* 5.16 (23–79 ई.) था; उसने अबीला के बजाय रेफाना को शामिल किया। ''भूगोल शास्त्री टालमी सहित जिसने अबीला की जगह रेफाना लिखा, दिकापुलिस की बाद की सूचियों में अठारह नगर दिए गए'' (*द इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया,* संशो. संस्क, सम्पा, जियोफ़्री डब्ल्यू. ब्रोमिले [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1979], 1:908 में विक्टर पी. हैमिल्टन, ''डेकापोलिस'')। [18]समानांतर विवरण मत्ती 9:1, 18, 19 और लूका 8:40–42 में हैं। याईर की बेटी के जिलाए जाने की पूरी कहानी मरकुस 5:21–43 में है। [19]समानांतर विवरण मत्ती 9:20–22 और लूका 8:43–48 में हैं। [20]क या यीशु उस स्त्री को छूने पर अशुद्ध हो गया? यीशु से कोई शुद्ध तो हो सकता था, परन्तु वह उस से अशुद्ध नहीं हो सकता था; यही कारण है कि जैसे ही उस स्त्री ने उसे छुआ, उसकी अशुद्धता जाती रही।

[21]शायद वैद्यों को परेशान होने बचाने के लिए कुछ हस्तलेखों में यह वाक्यांश जिसमें कहा गया कि उसने ''अपना सारा माल व्यय कर दिया था'' नहीं है। [22]बेबीलोनियन ताल्मुड *शब्बथ* 110ख. [23]यीशु ने दो चरणों में केवल एक चंगाई की (मरकुस 8:22–26)। [24]मार्टेल पेस, *हिब्रूस,* टुथ फ़ॉर टुडे कॉमैंट्री सीरीज़ (सरसी, आरकैंसा: रिसोर्स पब्लिकेशंस, 2007), 567. [25]समांनातर विवरण मत्ती 9:23–26 और लूका 8:49–56 में हैं। [26]याइर का विश्वास शायद उतना अधिक नहीं था जितना सूबेदार का था जिसका मानना था कि यीशु के दूर से कहने से भी उसका सेवक अच्छा हो जाएगा (मत्ती 8:5–13)। [27]थियोक्रिटस *आइडिल* 4. [28]विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ मरकुस,* दूसरा संस्करण, द डेली स्टडी बाइबल (फिलाडेल्फिया: वैस्टमिंस्टर प्रेस, 1956), 135. [29]देखें व्यवस्थाविवरण 17:6; 19:15; 2 कुरिन्थियों 13:1; इब्रानियों 10:28. [30]यह एक और संकेत है कि मरकुस रोमियों के लिए लिखा गया क्योंकि जहां भी कहीं अरामी भाषा का शब्द हुआ वहां उसे अनुवाद करना पड़ा।